संस्थापित १८६७ ई.

# आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२८ ● अंक : ३५ ● ३१ अगस्त, २०२३ (गुरुवार) श्रावण शुक्लपक्ष पूर्णिमा सम्वत् २०८० ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्:१६६०८५३१२४

**श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष**

## भारतीय साहित्य में कृष्ण परंपरा

-परीक्षित मंडल प्रेमी

भारतीय साहित्य में महायोगेश्वर श्रीकृष्ण की एक सुविस्तृत और समृद्ध परंपरा रही है। वैदिक युग से लेकर अद्यतन साहित्य में वे किसी-न-किसी रूप में वर्तमान है। हमारे देश का प्राचीनतम साहित्य संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है। इसमें भी विश्व की प्राचीनतम साहित्यिक रचना ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद संहिता है। इसका ऐतिहासिक काल अत्यन्त भूत में विलीन है। इतिहास की नजर से छानबीन करें तो आधुनिक विज्ञान के तमाम उन्नत उपकरणों के सहारे भी बेचारा इतिहास वेदों की प्राचीनता का भेद जानने में असमर्थ रहा है। आज संसार में वेदों से पुराना कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। भगीरथ प्रयत्न और दीर्घकालीन अन्वेषणों द्वारा भी अब तक वेदों से प्राचीनतम कोई और रचना उपलब्ध नहीं हो सकी है। चित्रलेख, गुहालेख शिलालेख, ताम्रपत्र और स्तम्भलेख आदि इससे अर्वाचीन ही है। उन्हें इसे प्राचीनतम मानने की प्रवृत्ति अनेकशः दिखाई पड़ती है। किन्तु वह ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से मान्य नहीं है। भगवान कृष्ण का अस्तित्व सर्वप्रथम वेदों में उपलब्ध होता है। विश्व का आदिग्रन्थ ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में कृष्ण का उल्लेख एक ऋषि के रूप में हुआ है। ऋग्वेद के अष्टम मंडल के सूत ८५, ८६ एवं ३७ और दशम मंडल के सूक्त संख्या ४२, ४३ एवं ४४ के संदर्भ में द्रष्टव्य है। इसी प्रकार ऐतरेय आरण्यक ३/२/६ में कृष्ण हारित उपाध्याय की चर्चा है। पुनः कौशीतकी ब्राह्मण ३०/६/६ में श्रीकृष्ण के आंगिरस का शिष्य होने की बात कही गई है। यथा- ''कृष्णो ह तदांगिरसो छन्दसीय तृतीय सवन ददर्श इसी प्रकार छान्दोग्योपनिषद ३/१७/६ में भी कृष्ण को घोर आंगिरस नामक ऋषि का शिष्य और देवकी पुत्र कहा गया है। यथा तद्वेतद् घोर आगिरसः कृष्णाय देवकी पुत्राय उक्त्वा उवाच महाभारत में भी श्रीकृष्ण को द्वारकाधीश कहा गया है। इसके अतिरिक्त श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णन है कि कंसवध के पश्चात् कृष्ण का वसुदेव के पुरोहित महर्षि गार्ग्याचार्य द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार हुआ और वे नियम पूर्वक गायत्री मंत्र द्वारा संध्योपासना में प्रवृत्त हुए।

विद्याध्ययन के लिए उन्हें

काश्यप गोत्री संदीपन नामक आचार्य के पास भेजा गया। वहाँ उन्होंने विधि पूर्वक शास्त्रों का अध्ययन और अनुशीलन किया। इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुराण ब्रह्मवैवर्तपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, हरिवंशपुराण, वायुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, देवीभागवतपुराण तथा अग्निपुराणों में भी कृष्णावतार की कथा वर्णित है। इससे पता चलता है कि वैदिक कृष्ण और महाभारत के कृष्ण के अतिरिक्त तीसरे पौराणिक कृष्ण भी हुए हैं। जिस कृष्ण के द्वारा गोकुल मथुरा और ब्रज के करील कुंजों में उन्मुक्त जीवन जीने तथा वृन्दावन की वादियों और सुरम्य सघन निकुंजों में किए गए रास एवं महारास लीला का विशद वर्णन है।

इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक युग के कृष्ण के अतिरिक्त महाभारत काल (५२३७ वर्ष) में भी महायोगेश्वर कृष्ण नाम के एक और ऐतिहासिक पुरुष हुए थे। इन्होंने महाभारत के महासमर में कुरुक्षेत्र के मैदान में अठारह अध्यायों और सात सौ श्लोकों में अर्जुन को गीतोपदेश दिया था। अधिकांश इतिहासकार, साहित्यकार, विद्वानचिन्तक श्रीमद्भगवद्गीता को महाभारत के भीष्मपर्व से लिया गया मानते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि गीता महाभारत का ही एक अंश है और महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं। अतः गीता को कृष्णोक्त कहने की अपेक्षा व्यासोक्त कहना अधिक उपयुक्त होगा। आज संपूर्ण गीता जिस रूप में उपलब्ध है, वह महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित तथा महाभारत के मौलिक भाग के अन्तर्गत है।

प्राचीन और अर्वाचीन परंपरा के अनुसार श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में जो उपदेश दिया था, वही वर्तमान गीता है। तब यह शंका होती है कि कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में जहाँ पाण्डवों की सात और कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना युद्ध करने के लिए व्यूहबद्ध खड़ी है, अन्तिम संकेत की प्रतीक्षा कर रही थी, तब वहाँ अर्जुन विषादयोग, सांख्ययोग, कर्मयोग ज्ञानकर्मसंन्यासयोग, कर्मसंन्यास-योग, आत्मसंयमयोग, ज्ञानविज्ञान-योग, अक्षरब्रह्मयोग, विद्याराजगुह्य-योग, विश्वरूप- दर्शनयोग, भक्तियोग, क्षेत्रक्षेत्रज्ञ- विभागयोग, गुणजयविभाग योग, पुरुषोत्तमयोग, दैवासुरसंपद- विभागयोग, श्रद्धाविभाग योग और मोक्षसंन्यासयोग के विषय में इतनी अधिक चर्चा कैसे हो सकती थी क्योंकि नगारे, ढोल, मृदंग, नरसिंघे और शंखध्वनि आदि के भयंकर शब्द से आकाश और पृथिवी गुंजायमान हो रही थी क्या कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि के तुमुल कोलाहल तथा खलबली में श्रीकृष्ण और अर्जुन के परस्पर संवाद के प्रत्येक शब्द को अक्षरशः लिपिबद्ध करने के लिए वहाँ कोई आशुलिपिक उपस्थित था? इस संबंध में तद्युगीन साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

## वेदामृतम्

**यस्यानक्षा दुहिता जात्वास, कस्तां विद्वां अभिमन्याते अन्धाम्।**
**कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते, य ईं वहाते य ईं वा वरेयात्**

ऋ. १०.२७.११

क्या तुम किसी विकलांग को देखकर सहानुभूति से द्रवित होने के स्थान पर कठोर हो जाते हो ? क्या तुम सोचते हो कि विधाता ने ऐसे हाथ, पैर, अंगुलि, आँख, जिह्वा, श्रोत्र आदि किसी अंग से विकृत करके इसे कष्ट भोगने के लिए ही सृजा है ? यदि तुम्हारा अपना कोई सम्बन्धी विकलांग होता, तो भी क्या तुम उसके प्रति ऐसा ही व्यवहार करते ? किसी अन्धे, काने, लूले, लंगड़े, बहरे, कुष्ठी आदि को देखकर तुम्हारी आँखें भर क्यों नहीं आतीं, हृदय दयार्द्र क्यों नहीं होता, ममता क्यों नहीं उद्वेल्लित होने लगती, सहायता की भावना क्यों नहीं बल लाती ? तुम सहानुभूति प्रदर्शित करने के स्थान पर उल्टा अन्धे को अन्धा कहकर पुकारते हो और कटे पर नमक छिड़कते हो। क्या तुम उसे बेटा, भैया, या बाबा सूरदास नहीं कह सकते ? क्या तुम्हें पंगु को लंगड़दीन कहने में ही आनन्द आता है ?

देखो, यदि किसी की पुत्री बिना आँखोंवाली होती है, तो क्या वह उसे अन्धी कहकर पुकारता है ? नहीं, उसके लिए तो वह 'रानी बेटी' ही होती है। उसकी उस अन्धी पुत्री के भार को यदि कोई वहन करता है और उसका पाणिग्रहण करता है, तो क्या उसके प्रति उसके नेत्र सजल नहीं हो जाते और उसे वह साधुवाद नहीं देता ? क्या वह उस सहायक के प्रति वाणी से वज्रपात करता है? क्या वह उसे बुरा-भला कहता है ? क्या वह उसे मारने के लिए हाथ में वज्र उठाकर दौड़ता है? नहीं, वह तो उसका माथा चूमता है और उसे शत-शत धन्यवाद देता है। ऐसा ही व्यवहार क्या उसे किसी दूसरे पुत्री को अन्धी देखकर नहीं करना चाहिए ? ऐसा ही दयालुता का बर्ताव क्या उसे अन्य किसी अंग से विकल भाई, बहन, पुत्री आदि को देखकर नहीं करना चाहिए ?

अतः आओ, आज से विकलांगों की सहायता का व्रत लें। किसी भी विकलांग को देखकर उसके प्रति ममत्व की भावना मन में जागृत करें। स्वयं से व्यक्तिगत रूप में जो भी हो सके, उसके लिए करें और उसे समाज एवं राष्ट्र से भी सहायता दिलाने का प्रयत्न करें। विकलांगों के लिए आतुरालय, शिक्षणालय आदि खुलवाकर उनके प्रति जो हमारा ऋण है, उससे उऋण हों।

आर्यो का मेला ! आर्यो का मेला ! आर्यो का मेला ! आर्यो का मेला !

चलो! दयानन्द के सिपाहियो समय पुकार रहा है।
महर्षि दयानन्द सरस्वती की २०० वीं जयन्ती पर भारत सरकार द्वारा निर्देशित
"ज्ञान ज्योति पर्व" पर उत्तर प्रदेश में आर्यों का महाकुम्भ।

ज्ञान ज्योति महोत्सव

दिनाङ्क :- आश्विन शुक्ल - त्रयोदशी, चतुर्दशी व पूर्णिमा २०८० वि0सं0
तदनुसार - २७, २८, व २९ अक्टूबर २०२३, दिन-शुक्रवार, शनिवार व रविवार

कार्यक्रम स्थल :- गुरुकुल राजघाट गङ्गातट

भव्य महर्षि पथयात्रा

२६ अक्टूबर २०२३ गुरुवार को प्रात: ८ बजे भव्य महर्षि पथयात्रा (विशाल शोभायात्रा) महर्षि दयानन्द सरस्वती की तप:स्थली "चासी" से प्रारम्भ होकर रसूलपुर, शफीनगर, दराबर, ताहारपुर, आहार, खन्दोई, खनौदा, चान्दौक, अनूपशहर, कर्णवास, पण्डावल, छलेसर, अतरौली, रामघाट, गोसाईंघाट, बेलौन, महर्षि आगमन के सभी स्थानों पर लगभग १०० कि.मी. तक दुपाहिया एवं चार पाहिया वाहनों से भ्रमण करते हुए राजघाट पर पूर्ण होगी।

आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं । सङ्गठनात्मक एकता हेतु अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें ।

निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश एवं समस्त गुरुकुल परिवार

कार्यक्रम स्थल का पता - महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल महाविद्यालय (ब्रह्माश्रम) राजघाट (नरौरा) बुलन्दशहर (उ० प्र०) : २०३३९३
सम्पर्क सूत्र : 9411488209, 9163013246, 7618196871, 9758980233

विशेष- सभी आर्य समाजों से आग्रह है कि उपरोक्त तिथियों में कोई भी स्थानीय कार्यक्रम ना बनाएं और सभी समाजें महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित इस 'ज्ञान ज्योति महोत्सव' गुरुकुल राजघाट में सम्मिलित होने का प्रयास करें।

**देवेन्द्रपाल वर्मा** — प्रधान/संरक्षक
**पंकज जायसवाल** — मंत्री/सम्पादक
**आर्य शिवशंकर वैश्य** — प्रबन्ध सम्पादक

# सम्पादकीय.....

## महर्षि दयानन्द सरस्वती मणिमाला

महर्षि दयानन्द की २००वीं जन्म-जयन्ती पर ऋषिवर के दो सौ उपकार :

१) वेद को सत्य विद्याओं का ग्रन्थ सिद्ध किया।
२) वेदों की ओर लौटों का नारा दिया।
३) वेद को ईश्वरोक्त संविधान बताया।
४) वेद को मानव जाति का धर्म ग्रंथ बताया।
५) वेदों की पुनः स्थापना की।
६) अशुद्ध वेद भाष्य को शुद्ध किया।
७) वेदों में इतिहास नहीं है यह बताया।
८) वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है यह सिद्ध किया।
९) वेद मनुष्य मात्र के लिए है यह बताया।
१०) स्त्रियों को वेद पढने अधिकार दिलाया।
११) शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया।
१२) त्रैतवाद को पुनः स्थापित किया।
१३) ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन अनादि तत्व बताया।
१४) वेद सिर्फ कर्मकांड के लिए नहीं है यह बताया।
१५) वेद ईश्वर प्रदत्त है मनुष्य कृत नहीं है, यह सिद्ध किया।
१६) स्मृति का मतलब वेद नहीं है, यह बताया।
१७) वेद में और सृष्टि में एकरूपता है यह बताया।
१८) ईश्वर और जीव एक नहीं है, यह सिद्ध किया।
१९) जीव कभी ईश्वर नहीं बन सकता, यह बताया।
२०) जीव ईश्वर का अंश नहीं है, इस सिद्धान्त को सुलझाया।
२१) प्रकृति मिथ्या नहीं है, यह बताया।
२२) छः दर्शनों में एकरूता है, यह बताया।
२३) उपनिषद ब्राह्मणादि ग्रंथ वेद अनुकूल हो तो सत्य है, यह सिद्ध किया।
२४) ईश्वर कर्मफल प्रदाता है, यह बताया।
२५) ईश्वर सब सत्य विद्या और पदार्थो का मूल है, यह समझाया।
२६) ईश्वर एक है ईश्वर अवतार नहीं लेता, यह सिद्ध किया।
२७) ईश्वर कभी दूत पैगंबर नहीं भेजता, यह समझाया।
२८) ईश्वर सर्वत्र व्यापक है, यह सिद्ध किया!
२९) वेद को आलस्य रुपी शंखासुर ले गया था, यह सिद्ध किया।
३०) वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में ही प्राप्त होता है, यह बताया।
३१) तीर्थ स्थानों पर जाने से पाप नहीं कटते, यह बताया।
३२) गंगा में डुबकी लगाने से पाप क्षमा नहीं होते, यह बताया।
३३) माता पिता ईश्वर आचार्य विद्वान ही सच्चे तीर्थ हैं।
३४) मूर्ति पूजा सीढी नहीं अपितु खाई है, यह चेताया।
३५) जन्मना जातिवाद को मिथ्या बताया।
३६) कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को सही बताया।
३७) शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता है, यह उद्घोष किया।
३८) छुआछूत को मिटाया- अस्पृश्यता को दूर भगाया।
३९) जन्म से नहीं कर्म से मनुष्य महान बताया।
४०) विधवाओं का विवाह उचित बताया।
४१) विधवाओं को नारकीय जीवन से निकलवाया।
४२) सती प्रथा को मानव जाति पर सबसे बडा धब्बा बताया।
४३) बहु विवाह को घातक बताया।
४४) स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार दिलाया।
४५) पर्दा प्रथा को रोक लगाया।
४६) बाल विवाह को बंद कराया।
४७) अनमेल विवाह को बंद करवाया।
४८) नारी का सम्मान बढ़ाया।
४९) गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ बताया।
५०) ब्रह्मचर्य की महिमा बताई।
५१) विवाह में गुण कर्म स्वभाव के मेल को आवश्यक बताया।
५२) वानप्रस्थ की उपयोगिता बताई।
५३) संन्यासियों का महत्व और कार्य बताया।
५४) सोलह संस्कार सिखालाया, संस्कार विधि जैसा मानव निर्माण के लिये ग्रन्थ लिखा।
५५) बाल शिक्षा सिखाई।
५६) जन्म पत्र को शोक पत्र बताया।
५७) माता निर्माता भवति बताया।
५८) बालक के लिए माता की शिक्षा सर्वोच्च बताई।
५९) बालक - बालिका के लिए अलग-अलग शिक्षा बताई।
६०) अनिवार्य शिक्षा के महत्व को बताया।
६१) पाठशाला न भेजने पर माता-पिता को दोषी बताया।
६२) विद्या काल में समान भोजन वस्त्र व्यवहार सिखाया।
६३) आर्ष शिक्षा का महत्व बताया।
६४) अनार्ष ग्रंथों की पहचान बताई।
६५) ऋषि कृत ग्रंथों का महत्व बताया।
६६) ऋषियों के ग्रंथों में मिलावट को हटाया।
६७) पठन-पाठन व्यवस्था सिखाई।
६८) ब्रह्मा से लेकर जैमिनी के तथ्यों को अपना मंतव्य बताया।
६९) महापुरुषों पर लगे दोषों को हटाया।
७०) योग विद्या सिखाई!
७१) अष्टांग योग सिखाया!

शेष पृष्ठ ३ पर.....

गतांक से आगे.....

# सत्यार्थ प्रकाश

## अथ त्रयोदश समुल्लास

## अथ कृश्चीनमत विषयं व्याख्यास्यामः

### जबूर का दूसरा भाग

### काल के समाचार की पहली पुस्तक

### मत्ती रचित इज्जील

इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों के संगियों ने ठट्ठा कर कहा।। उसने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है, जो वह इस्राएल का राजा है तो क्रूश पर से अब उतर आवे और हम उसका विश्वास करेंगे। वह ईश्वर पर भरोसा रखता है, यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उसको बचावे क्योंकि उसने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूँ।। जो डाकू उसके संग चढ़ाये गये उन्होंने भी इसी रीति से उसकी निन्दा की।। दो प्रहर से तीसरे प्रहर लों सारे देश में अन्धकार हो गया। तीसरे प्रहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार के कहा 'एली एली लामा सबक्तनी' अर्थात् हे मेरे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर! तूने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग वहां खड़े थे उनमें से कितनों ने यह सुनके कहा, वह एलीयाह को बुलाता है। उनमें से एक ने तुरन्त दौड़ के इस्पंज लेके सिरके में भिगोया और नल पर रख के उसे पीने को दिया।। तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकार के प्राण त्यागा।।

-इ० म० प० २७। आ० ११ १२ १३ १४ २२ २३ २४ २६ २७ २८ २९ ३० ३४३५ ३७ ३८ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४४५४६ ४७४८। ५०।।

(समीक्षक) सर्वथा यीशु के साथ उन दुष्टों ने बुरा काम किया। परन्तु यीशु का भी दोष है। क्योंकि ईश्वर का न कोई पुत्र न वह किसी का बाप है। क्योंकि वह किसी का बाप होवे तो किसी का श्वसुर, श्याला सम्बन्धी आदि भी होवे। और जब अध्यक्ष ने पूछा था तब जैसा सच या उत्तर देना था। और यह ठीक है कि जो-जो आश्चर्य-कर्म्म प्रथम किये हुए सच्चे होते तो अब भी क्रूश पर से उतर कर सब को अपने शिष्य बना लेता। और जो वह ईश्वर का पुत्र होता तो ईश्वर भी उसको बचा लेता। जो वह त्रिकालदर्शी होता तो सिर्के में पित्त मिले हुए को चीख के क्यों छोड़ता। वह पहले ही से जानता होता। और जो वह करामाती तो पुकार-पुकार के प्राण क्यों त्यागता? इससे जानना चाहिये कि चाहे कोई भी चतुराई करे परन्तु अन्त में सच-सच और झूठ-झूठ हो जाता है। इससे भी सिद्ध हुआ कि यीशु एक उस समय के जंगली मनुष्यों में से कुछ अच्छा था। न वह करामाती, न वह ईश्वर का पुत्र और न विद्वान् था। क्योंकि जो ऐसा होता तो ऐसा वह दुःख क्यों भोगता?।। ९०।।

९१-और देखो, बड़ा भुईडोल हुआ कि परमेश्वर का एक दूत उतरा और आ के कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़का के उस पर बैठा।। वह यहां नहीं है, जैसे उसने कहा वैसे जी उठा है। जब वे उसके शिष्यों को सन्देश देने को जाती थीं, देखो यीशु उनसे आ मिला, कहा कल्याण हो और उन्होंने निकट आ, उसके पांव पकड़ के उसको प्रणाम किया।। तब यीशु ने कहा मत डरो, जाके मेरे भाइयों से कह दो वे गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे।। ग्यारह शिष्य गालील में उस पर्वत पर गये जो यीशु ने उन्हें बताया था। और उन्होंने उसे देख के उसको प्रणाम किया पर कितनों का सन्देह हुआ।। यीशु ने उनके पास आ उनसे कहा, स्वर्ग में और पृथिवी पर समस्त अधिकार मुझको दिया गया है। और देखो मैं जगत् क अन्त लों सब दिन तुम्हारे संग हूँ।।

-इ० म० प० २८ आ० २।६। ९। १०। १६। १७। १८। २०।।

क्रमशः अगले अंक में...

# दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

### विविध विषय

## (पं. लेखराम जी द्वारा किये हुए प्रश्नों का उत्तर-१७ मई,१८८१)

आर्यपथिक पं० लेखराम जी अपने बनाये हुए महर्षि के जीवन चरित्र में लिखते हैं-

११ मई, सन् १८८१ को संवाददाता पेशावर से स्वामी जी के दर्शनों के निमित्त चलकर १६ की रात को अजमेर पहुंचा। और वहां पहुंचकर स्टेशन के समीप वाली सराय में डेरा किया और १७ मई को प्रातःकाल सेठ जी के बागीचे में जाकर स्वामी जी का दर्शन प्राप्त किया। उनके दर्शन से मार्ग के समस्त कष्टों को भूल गया और उनके सत्योपदेशों से समस्त समस्याएं सुलझ गई । जयपुर के एक बंगाली सज्जन ने मुझ से प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्म भी, दो व्यापक किस प्रकार इकट्ठे रह सकते हैं ?

मुझसे इसका कुछ उत्तर न बन पाया। मैंने यही प्रश्न स्वामी जी से पूछा। उन्होंने एक पत्थर उठाकर कहा कि इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं ?

मैंने कहा कि व्यापक है।

फिर पूछा कि मिट्टी ? मैंने कहा कि व्यापक है ।

फिर पूछा कि जल ? मैंने कहा कि व्यापक है।

फिर पूछा कि परमात्मा ? मैंने कहा कि वह भी व्यापक है ।

कहा कि देखा कितनी चीजें हैं परन्तु सब इसमें व्यापक हैं। वास्तव में बात यह है कि जो जिससे सूक्ष्म होती है वह उसमें व्यापक हो सकती है । ब्रह्म चूकि सबसे प्रति सूक्ष्म है इसलिये सर्वव्यापक है, जिससे मेरी शान्ति हो गई ।

मुझ से उन्होंने कहा कि और जो तुम्हारे मन में सन्देह हों सब निवारण कर लो मैंने बहुत सोच विचार कर दश प्रश्न लिखे जिनमें से आठ मुझे स्मरण हैं, शेष भूल गये ।

प्रश्न- जीव ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमारण बतलाइये ?

उत्तर- यजुवेद का ४०वाँ अध्याय सारा जीव-ब्रह्म का भेद बतलाता है।

प्रश्न- अन्य मत के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिये या नहीं ?

उत्तर- अवश्य करना चाहिये ।

प्रश्न- विद्युत् क्या वस्तु है और किस प्रकार उत्पन्न होती है ?

उत्तर - विद्युत् सर्वत्र है और रगड़ से उत्पन्न होती है। बादलों की विद्युत् भी बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

मुझसे कहा कि २५ वर्ष से पूर्व विवाह न करना। कई ईसाई और जैनी प्रश्न करने आते परन्तु शीघ्र निरुत्तर हो जाते थे । (लेखराम पृ० ५३२)

पृष्ठ.....२ का शेष

७२) प्राणायाम का महत्व बताया।
७३) किसी व्यक्ति विशेष की पूजा का निषेध किया।
७४) गुरुडम का खण्डन किया।
७५) पाखंड का गढ़ढाया।
७६) अंधविश्वास को दूर भगाया।
७७) यज्ञों में हिंसा पुरजोर खण्डन किया।
७८) नरबलि को कलंक बताया।
७९) कर्मकांड की शुद्धि करवाई।
८०) पंच महायज्ञ का प्रचलन करवाया।
८१) जादू टोना टोटका को दूर भगाया।
८२) भूत- प्रेत का डर दूर भगाया।
८३) पूर्वजन्म- पुनर्जन्म के महत्व को बताया।
८४) कर्मफल व्यवस्था का महत्व बताया।
८५) यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ पूजा बताया।
८६) यज्ञ को पर्यावरण के लिए अत्यावश्यक बताया।
८७) गृहस्थाश्रम के पंच महायज्ञ अनिवार्य बताया।
८८) सन्ध्या की विशेषता बताई।
८९) सन्ध्या की विधि सिखलाई।
९०) परमेश्वर को ही उपासनीय बताया।
९१) सभी प्राणियों में ईश्वर को व्याप्त बताया।
९२) अहिंसा का पाठ पढ़ाया।
९३) शाकाहार का महत्व बताया।
९४) मंदिरों पर चढ़रहे बलि को निषेध किया।
९५) आहार-विहार के पचड़े को मिटाया।
९६) शूद्र से भोजन व्यवस्था को सही बताया।
९७) व्रत के महत्व को बताया।
९८) फलित ज्योतिष की सच्चाई बताई।
९९) ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव को अंधविश्वास बताया।
१००) कर्मानुसार सुख-दुःख बताया।
१०१) सब जीवों को जीने का अधिकार बताया।
१०२) गौ रक्षा का महत्व बताया।
१०३) गौ करुणानिधि बनाई।
१०४) सर्वप्रथम रेवाड़ी में गौशाला स्थापित कराई।
१०५) गौ रक्षा के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया।
१०६) गौ रक्षा के लिए महारानी विक्टोरिया को पत्र लिखा।
१०७) गौ से कृषि और कृषि से भारत का उत्थान बताया।
१०८) पराधीन भारत में कल-कारखाने खोलने की प्रेरणा दी।
१०९) उद्योग लगाने के लिए सर्वप्रथम प्रयास किया।
११०) स्वदेशी को सर्वोपरि बताया।
१११) स्वदेशी वस्तुओं का महत्व बताया।
११२) भारतीय सभ्यता के स्वाभिमान को जगाया।
११३) उंगलियों की बत्ती बनाकर जलाने पर भी सत्य कहने की बात कही।
११४) बालकों की शिक्षा मौलवी पादरियों से कराने का निषेध किया।
११५) सर्वमत की एकता के लिए प्रयास किया।
११६) सबको दुराग्रह छोड़कर एक साथ लाने के लिए बल दिया।
११७) सर्वधर्म सम्मेलन बुलवाया।
११८) श्राद्ध तर्पणकर्म जीवित अवस्था में करना चाहिए, यह बताया।
११९) मरने के बाद मातापिता को कुछ नहीं दिया जा सकता, यह बताया!
१२०) यज्ञोपवीत संस्कार का पुनः प्रचलन किया।
१२१) शूद्रों और स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण का अधिकारी बताया।
१२२) भागवत का खंडन किया।
१२३) अठारह पुराणों को वेद विरुद्ध बताया।
१२४) अवतारवाद पूजा को हानिकारक बताया।
१२५) सत्य के प्रचार के लिए पादरियों मौलवियों से सैकड़ों बार शास्त्रार्थ किया।
१२६) काशी में सबसे बड़ा शास्त्रार्थ करके मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध बताया।
१२७) वेद पाठशाला की स्थापना की।
१२८) गुरुकुल प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया।
१२९) मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया।
१३०) मोक्ष की अवधि बताई।
१३१) ईश्वर के प्रमुख १०० नाम बताये।
१३२) ईश्वर और जीव का भेद बताया।
१३३) नमस्ते को आर्यों का अभिवादन बताया।
१३४) स्वर्ग और नरक की वास्तविक परिभाषा बताई।
१३५) स्वराज्य का सबसे पहले उद्घोष किया।
१३६) १८५७ की क्रांति में भूमिका निभाई।
१३७) स्वराज को ही सुराज बताया।
१३८) पराधीन देश में लोकतंत्र की बात कही।
१३९) नमक कर का सर्वप्रथम विरोध किया।
१४०) विदेशी राजा हमारे देश में कभी न हो यह स्वाभिमान के साथ कहा!
१४१) जंगली वस्तुओं पर चुंगी कर का विरोध किया।
१४२) स्टाम्प पेपर का विरोध किया।
१४३) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए वकालत की।
१४४) राजनीति पर गहन प्रकाश डाला।
१४५) राजाओं के लिए भी लोकतंत्र की बात कही।
१४६) धर्म और राजनीति का सुंदर समन्वय बताया।
१४७) सत्यार्थप्रकाश जैसे अद्भुत ग्रंथ की रचना की।
१४८) प्रथम क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को इंग्लैंड भेजा।
१४९) जीवन में १७ बार घोर विष का पान किया।
१५०) प्रचार करते हुये पत्थर खाये, विषधर सर्प तक फेंके गये।
१५१) क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे।
१५२) महादेव गोविंद रानाडे आपकी शिष्य रहे।
१५३) सत्यार्थप्रकाश को पढकर पंडित राम प्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारी बने।
१५४) १८७५ ई. में आर्यसमाज की स्थापना की।
१५५) किसी व्यक्ति विशेष को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया।
१५६) आर्यसमाज को जनतांत्रिक संगठन बनाया।
१५७) पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय जैसे अनेकों बलिदानी प्रदान किए।
१५८) आर्य बाहर से नहीं आए, यह घोषणा की।
१५९) आर्य का अर्थ श्रेष्ठ बताया।
१६०) भारत में आर्यों को मूल निवासी बताया।
१६१) आर्य और द्रविड़ के भेद को मिटाया।
१६२) आर्यों द्वारा बसाया होने से प्राचीन नाम 'आर्यावर्त' बताया।
१६३) आर्यसमाज को अपना उत्तराधिकारी बनाया।
१६४) आर्यसमाज जैसा संगठन बनाकर देश को सशक्त सेना प्रदान किया।
१६५) आर्य को जाति वाचक नहीं गुण वाचक संज्ञा बताया।
१६६) आर्य कोई जाति नहीं अपितु श्रेष्ठ व्यक्तियों का संगठन बताया।
१६७) आर्यसमाज में स्वयं कोई पद नहीं लिया।
१६८) राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया।
१६९) स्वदेशी वेशभूषा पर गर्व करना सिखाया।
१७०) एक देश, एक संस्कृति बताया।
१७१) एक देश एक भाषा के महत्व को समझाया।
१७२) हिंदी को आर्य भाषा बताया।
१७३) हिंदी को माथे की बिंदी बताया!
१७४) हिंदी साहित्य के द्वारा क्रांति का सूत्रपात कराया।
१७५) अपनी भाषा पर गर्व करना सिखाया!
१७६) हिंदी भाषा को सर्वप्रथम आर्य भाषा संबोधित किया।
१७७) हिंदी भाषा को भारत में सर्वसामान्य की भाषा बताया।
१७८) हिंदी भाषा में साहित्य लिखकर हिंदी का मान बढाया।
१७९) हिंदी भाषा को राष्ट्र एकीकरण की भाषा कहा।
१८०) बिना उर्दू शब्दों के हिंदी भाषा में ही अपने सारे ग्रंथों का लेखन कार्य किया।
१८१) जन सामान्य को समझ में आए इसलिए संस्कृत के स्थान पर हिंदी भाषा में व्याख्यान करना निश्चित किया।
१८२) विदेश में जाने का मार्ग प्रशस्त किया।
१८३) विदेश जाने से कोई पाप नहीं लगता ऐसा सिद्ध किया।
१८४) पानी जहाज की यात्रा को आवश्यक बताया।
१८५) विदेशी व्यापार करने की बात बताई!
१८६) विदेश संयंत्र मंगवाने की बात कही।
१८७) कभी कोई संपत्ति नहीं बनाई।
१८८) अपना स्वयं का कोई घर नहीं बनाया।
१८९) किसी प्रलोभन से विचलित नहीं हुए।
१९०) करोड़ों की संपत्ति ठुकराई।
१९१) गुरु के एक बार कहने पर पूरा जीवन समर्पित कर दिया।
१९२) अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया।
१९३) कभी चरित्र को दाग लगने नहीं दिया।
१९४) समाधि को छोड़कर लोगों के दुःख दूर करने का बीड़ा उठाया।
१९५) मरणोपरान्त मेरी समाधि नहीं बनायें, यह बताकर गये।
१९६) मेरी अस्थियां और भस्म खेत में डालने को कहा।
१९७) यह भी कहा कि मुझे कभी मत पूजना!
१९८) ऐसा कहने वाला मेरे गुरु जैसा और कोई नहीं था।
१९९) बनारस में मूर्ति पूजा का खण्डन न करने पर आपको अवतार घोषित कर देंगे। ऐसे सबसे बड़े प्रलोभन को ठुकराया।
२००) मानव जाति के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

गिने जाये मुमकिन है सेहरा के जर्रे।
समुन्दर के कतरे फलक के सितारे!!
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसान।
न गिनती में आये कभी हमसे सारे!!
न गिनती में आये सभी हमसे सारे!!

आप सभी महानुभावों को देव दयानन्द द्विशतक जन्म- जयन्ती की बहुत-बहुत शुभकामनाये।

साभार-वैदिक सम्वाह

●●●

# वैदिक धर्म–एक संक्षिप्त परिचय

–उत्तम प्रकाश

एक समय वह भी था जब सारे संसार का एक ही धर्म था–वैदिक धर्म। एक ही धर्मग्रन्थ था वेद। एक ही गुरु मंत्र था–गायत्री।सभी का एक ही अभिवादन था–नमस्ते।एक ही विश्वभाषा थी–संस्कृत।और एक ही उपास्य देव था–सृष्टि का रचयिता परमपिता परमेश्वर,जिसका मुख्य नाम ओ३म् है। तब संसार के सभी मनुष्यों की एक ही संज्ञा थी–आर्य। सारा विश्व एकता के इस सप्त सूत्रों में बँधा, प्रभु का प्यार प्राप्त कर सुख शान्ति से रहता था।दुनिया भर के लोग आर्यावर्त कहलाने वाले इस देश भारत में विद्या ग्रहण करने आते थे।अध्यात्म और योग में इसका कोई सानी नहीं था।

किन्तु महाभारत युद्ध के पश्चात् ब्राह्मण वर्णीय जनों के 'अनभ्यासेन वेदानां' अर्थात् वेदों के अनभ्यास तथा आलस्य और स्वार्थ बुद्धि के कारण स्थिति बदली और क्षत्रियों में ''जिसकी लाठी उसकी भैंस'' वाली एकतांत्रिक सामन्तवादी प्रणाली चल पड़ी।धर्म के नाम पर पाखंडियों अर्थात् वेदनिन्दक, वेद विरुद्ध आचरण करने वालों की बीन बजने लगी,यह विश्वसम्राट् एवं जगतगुरु भारत विदेशियों का क्रीतदास बनकर रह गया। जो जगतगुरु सबका सरताज कहलाने वाला था उसे मोहताज बना दिया गया।

दासता की इन्हीं बेड़ियों को काटने और धर्म का वास्तविक स्वरुप बताने के लिए युगों-युगों के पश्चात् इस भारत भूमि गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम की मिट्टी से एक रत्न पैदा हुआ जिसका नाम मूलशंकर रखा गया। जो बाद में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' के नाम से विश्वविख्यात् हुआ। जब उसने धर्म के नाम पर पल रहे घोर अधर्म, अन्धविश्वास, रुढ़िवाद, गुरुड़मवाद, जन्मगत मिथ्या जात्याभिमान, बहुदेववाद, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध और मूर्ति पूजा आदि बुराइयों के विरुद्ध पाखण्ड-खण्डिनी पताका को फहराते हुए निर्भय नाद किया तो सारा भूमंडल टंकारा वाले ऋषि की जय जयकार कर उठा।

उसकी इस विजय के पीछे सबसे बड़ा कारण चिरकाल से सोई हुई मानव जाति को उसके वास्तविक धर्म से परिचित कराना था। महर्षि ने धर्म के नाम पर लुटती मानवता को अज्ञान अन्धकार से बाहर निकालकर सत्य सनातन वैदिक धर्म में पुनः स्थापित किया। आज यदि हम निष्पक्ष होकर तुलना करें कि वैदिक सम्पत्ति को हमारे समक्ष किसने प्रस्तुत किया तो वह मुक्तात्मा देव दयानन्द है, जिसके ऋण से उऋण हम तभी हो सकते हैं जब वैदिक धर्म को भली-भाँति समझकर अपने जीवन को उसके प्रकाश से आलोकित करें।

वैदिक धर्म संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों का उसी प्रकार आधार है जिस प्रकार संसार की समस्त भाषाओं का आधार संस्कृत भाषा है जो सृष्टि के प्रारम्भ से अभी तक अस्तित्व में है। संसार भर के अन्य मत, पन्थ किसी पीर-पैगम्बर, मसीहागुरु, महात्मा आदि द्वारा चलाये गये हैं, किन्तु चारों वेदों के अपौरुषेय होने से वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

वैदिक धर्म में एक निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी ईश्वर को ही पूज्य माना जाता है,उसी की उपासना की जाती है, उसके स्थान पर अन्य देवी-देवताओं की नहीं।

धर्म की परिभाषाः-जिसका स्वरुप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है,जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए मानने योग्य है ,उसे धर्म कहते हैं।

उत्तम मानवीय गुण-कर्म-स्वभाव को धारण करना ही धर्म की सार्थकता को सिद्ध करता है।

कुछ शंकाएं:-

प्रश्न :- ईश्वर को सातवें आसमान,चौथे आसमान, परमधाम, बैकुण्ठ आदि एक स्थान पर मानने से क्या हानि है?

उत्तरः- जो किसी एक स्थान पर रहता है,वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता और जो सर्वज्ञ नहीं है वह सब जीवों के कर्मों को जानकर उनका उचित फल नहीं दे सकता और जो उचित फल नहीं दे सकता वह न्यायकारी नहीं हो सकता। ईश्वर सातवें आसमानादि स्थानों में रहता है, यह बात प्रत्यक्षादि प्रमाणों से भी सिद्ध नहीं है। अतः अमान्य है।

प्रश्नः- जैसे जीव शरीर के एक स्थान में रहते हुए सम्पूर्ण शरीर के व्यापार को जानता है,वैसे ही परमेश्वर भी परमधामादि में एक स्थान पर रहते हुए भी सब कुछ जान सकता है और कर्मो का फल दे सकता है।

उत्तर :- यह दृष्टान्त सत्य नहीं है क्योंकि शरीर में एक स्थान में रहने वाला जीव सम्पूर्ण शरीर के व्यापार को जानता होता तो कोई भी व्यक्ति कभी रोगी नहीं होता। बड़े-बड़े वैद्य डाक्टर भी शरीर के विषय में पूर्ण रुप से नहीं जानते ,और वे रोगी भी हो जाते हैं।इसलिए यह मान्यता असत्य है कि जीव शरीर में एक स्थान पर रहता हुआ सम्पूर्ण शरीर के विषय में जानता है। सर्वज्ञ केवल वही हो सकता है जो सर्वव्यापक हो,एक स्थान में रहने वाला नहीं।

प्रश्नः- जब ईश्वर सर्वव्यापक है तो जीव और प्रकृति के रहने के लिए कोई स्थान नहीं रहना चाहिए ?

उत्तर :- ईश्वर पत्थर की भाँति स्थान को नहीं घेरता और न जीव स्थान को घेरता है। इसलिए ईश्वर के सर्वव्यापक होने पर भी जीव और प्रकृति के रहने में कोई बाधा नहीं है।

प्रश्न :- ईश्वर के अतिरिक्त जीव और प्रकृति को स्वतंत्र अनादि पदार्थ मानने की क्या आवश्यकता है? ईश्वर स्वयं जीव और संसार के भूमि आदि सब पदार्थों को अपने स्वरुप से ही उत्पन्न कर लेवेगा ?

उत्तर :- ईश्वर निर्विकार और निराकार है, अतः जीव, प्रकृति आदि को स्वरुप से उत्पन्न नहीं कर सकता और चेतन से जड़ की उत्पत्ति भी कभी नहीं हो सकती।

●●●

**देश के जन प्रतिनिधियों से मेरे तीन प्रश्न एवं प्यारे राष्ट्र के युवाओं के लिए इस बहन की उद्घोष**

# मातृभूमि के उपासक बनें हम

-प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार

भारत को विश्व का पुरातन तथा सनातन राष्ट्र के रूप में देखा जाता है। जब विश्व में सभ्यता का उभ्युदय हुआ, तब भी हमारा राष्ट्र प्राचीनतम राष्ट्रों में से एक था। क्योंकि विश्व का प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद यहीं लिखा गया, जो पूर्व में सहस्रों वर्षों तक ऋषियों-मनीषियों द्वारा कंठस्थ करके एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता रहा।

राष्ट्र निर्माण का चिन्तन कहाँ से आया?

वस्तुतः वैदिक साहित्य विश्व के इतिहास में मानव की अमूल्य धरोहर है। क्योंकि इसमें मानव जीवन के आदर्शों, नैतिक मूल्यों, मानवीय प्रणाली का आदर्श प्रस्तुत है। वेदों में व्यक्ति के जीवन संचेतना से लेकर राष्ट्र जीवन की संकल्पना का उत्कृष्ट वर्णन है।

अत्यंत रोचक बात तो यह है कि विश्व में राष्ट्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में किया गया है। ऋग्वेद के ६०वें मण्डल के अन्तिम १६१ (१६१) वें मंत्र में समूचे राष्ट्र को संगठित करने का अद्भुत संदेश है। इसमें कहा गया है-

''सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो
मनांसि जानताम्।''
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना
उपासते ।।''
(ऋ० १०/१६१/२)

अर्थात् जीवन आदर्श प्रणाली एवं राष्ट्र - ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यों ! तुम सब मिलकर चलो मिलकर बोलो मिलकर प्रत्येक क्षेत्र में परस्पर सहयोग करो, ताकि जीवन एवं राष्ट्र का अभ्युदय (ज्ञान, विज्ञान, तकनीकि साहित्य, कला, वाणिज्य आदि) होता रहे।

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का इतना व्यापक एवं अनुपम संदेश अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

राष्ट्र में एकता एवं अखण्डता का भाव कैसे उत्पन्न होगा?

हालाँकि अथर्ववेद राष्ट्रोत्थान की सर्वोत्तम कृति मानी जाती है। क्योंकि अथर्ववेद का पूरा एक अध्याय (१२वाँ उपसर्ग) ही राष्ट्र प्रेम-भक्ति एवं भावना को पूर्णतः समर्पित है, इसे ही पृथ्वी सूक्त या भूमि सूक्त कहा गया है। ऐसा कहना अतिशयोक्ति न होगा कि अथर्ववेद राष्ट्र - वन्दना का मधुरतम संगीत है।

राष्ट्र में एकता एवं अखण्डता का भाव उत्पन्न करने के लिए ऋग्वेद बड़े ही सुन्दर शब्दों में आदेश करता है-

''इला सरस्वती मही तिस्रो
देवीर्मयोभुवः ।
बर्हिः सीदन्त्वस्रधः ।।
(ऋग्वेद-१/१३/६ )

इसका यह अर्थ है कि मातृभाषा (इला) मातृसभ्यता-संस्कृति (सरस्वती) एवं मातृभूमि (मही), ये तीनों देवियाँ हमारी माताएँ हैं और हम सबका कल्याण करने वाली हैं।

मातृभाषा

चाहें किसी की क्षेत्रीय भाषा कुछ भी हो किन्तु जब भिन्न-भिन्न भौगोलिक एवं विभिन्न परम्पराओं, भाषाओं के लोग जब एक-दूसरे से मिलते है, तो अपनी मातृभाषा (हिन्दी) में सहृदय अपने-अपने मनोभावों को व्यक्त करते हैं। यही तो अनेकता में एकता ( Unity is Diversity) को प्रमाणित करता है।

अतः राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं साहित्य कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों की उन्नति के लिए राष्ट्र की मातृभाषा से प्रेम अत्यंत आवश्यक है। मातृभाषा-प्रेम हममें राष्ट्रवादी होने के गौरव एवं अभिमान के स्थान पर स्वाभिमान को जन्म देती है। यही मातृभाषा बड़ी सरलता से हम सबको एक सूत्र में बाँध देती है। जब जन-जन के मुख से निकला ''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' गगनभेदी गीत राष्ट्रप्रेम जगा देता है।

यह मातृभाषा ही तो है, जो स्वराज्य, स्वदेशी, वन्देमातरम्, जय हिन्द एवं भारत माता की जय' के नारों से हमारे हृदय में राष्ट्र भक्ति के दीप जला देती है।

मातृसभ्यता एवं संस्कृति

सरस्वती अर्थात् सरसतामयी संस्कृति, प्रवाहयुक्त परम्परा द्य ऐसा अनादि प्रवाह जिसमें गुरू-शिष्य की परम्परा हो, जिसमें संस्कारों से युक्त परिवारों की श्रृंखला समाज का आधारभूत निर्माण करती हो। शिक्षा की वह विधा जो जीविकोपार्जन एवं भविष्य निर्माण के साथ-साथ हमारे जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हुए जीवन कैसे जीना है, के संसाधनों को बता देती हो। समाजशास्त्र के शब्दों में कहें तो हमारे देश के अलग-अलग राज्यों की अलग-अलग संस्कृति एवं सभ्यता है, किन्तु फिर भी हम सभी राष्ट्रवासी एक हैं।

इतनी विभिन्नता किन्तु हम सब एक कैसे हैं?

तो इसका अत्यंत रोमांचकारी उत्तर ऋग्वेद के उपर्युक्त मंत्र के सरस्वती शब्द में समाया है कि सभ्यता वाह्य पक्ष है, तो संस्कृति आन्तरिक सभ्यता शरीर है, तो संस्कृति इसकी आत्मा। सभ्यता भौतिक विज्ञान-तकनीकि आदि) विकास है, तो संस्कृति आध्यात्मिक (मानवीय गुण चारित्रिक बल, नैतिक मूल्य आदि) विकास का नाम है। विविधता के उपरांत भी एकता तब रहेगी जब वाह्य पक्ष के साथ-साथ आन्तरिक पक्ष भी सबल होगा। विविधता में एकता के लिए सरस्वती की प्रवाहमयी धारा की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

यही धारा तो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' एवं ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' की विचाराधारा हमारे मन-मस्तिष्क में प्रवाहित करती है। यही धारा ''अतिथि देवो भव' एवं 'मनुर्भव (मनुष्य बनो यानी मानवीय गुणों से युक्त) की प्रबल भावना भरती है। राष्ट्र की सदृश प्रगति एवं अखण्डता के लिए सरस्वती माता की उपस्थिति ठीक वैसे ही है, जैसे शरीर में आत्मा की उपस्थिति। इसलिए संस्कृति के बिना राष्ट्र मृत हो जाता है, जैसे शरीर आत्मा के बिना।

मातृभूमि की महिमा

प्रश्न उत्पन्न होता है कि मातृभूमि क्या है? इसका मर्म वेदों ने बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है कि सभी मानव मन विचार एवं हृदय से एक होकर इस भूमि को अपनी माँ समझें। अथर्ववेद के अनुसार-

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः ।
(अथर्व १२/१/१२ )

अर्थात् यह मातृभूमि मेरी माता है और मैं इस विशाल पृथ्वी का पुत्र हूँ। मातृभूमि किसी पर्वत, नदी अथवा समुद्र का नाम नहीं मातृभूमि तो वह केन्द्रिय विचारधारा एवं आन्तरिक आलिक मनोभाव है। जिसमें हमें अपनी माँ दिखाई देती है। मातृभूमि पर लहलहाती फसलों, जीवनदायिनी नदियों, अपनी भुजाओं को फैलाये अपना स्नेह देने को आतुर जब हम वृक्षों को देखते हैं, तो हमें अपनी प्यारी जन्मभूमि माता के आँचल का वात्सल्य अनुभव होता है। हमारीजन्मदायिनी माँ के साथ यदि कोई समस्त कष्टों एवं आपदाओं को झेलते हुए भी हमें जन्म से मृत्युपर्यन्त अपना स्नेह और दुलार देती हुई अपने अंक (गोद) में बैठाती है, वह हमारी प्यारी मातृभूमि ही तो है। इसकी माटी अत्यंत पावनी एवं सोंधी सुगंध से युक्त है।

हमारी मातृभूमि के शासक कैसे हों?

किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा संचेतना, उन्नति गौरव एवं आनन्द तभी सम्भव है, जब उस राष्ट्र अथवा राज्य का शासक अपनी यज्ञमयी भावना एवं यज्ञमयी व्यक्तित्व यानी मातृभूमि से पुत्र के समान स्नेह, आदर, श्रद्धा भक्ति एवं विश्वास रखने वाला हो तथा प्रजा का पिता के समान पालक और पोषक हो। यजुर्वेद कहता है-

''अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव ।(६/२८)

हमारे देश का शासक (नेता) कर्तव्य भावना एवं सेवा भाव से धर्मयुक्त सदाचरण (चरित्रवान नैतिक मूल्यों का पुजारी, मानवीय परम्पराओं का संवाहक एवं संरक्षक आदि) करते हुए प्रजा का पालन करे।

शासकों (नेताओं) के गुण-

- राजनीति के क्षेत्र में जाने मात्र से ही कोई नेता नहीं हो जाता है।
- राजनीति में धनबल अपराधबल अथवा विरासतबल के माध्यम से आने वाले लोग (पंचायत स्तर से लेकर केन्द्र तक पहुँचने वाले) नेता या शासक या नेतृत्वकर्ता नहीं होते है।
- नेतृत्वकर्ता नी धातु से निष्पन्न शब्द है, जिसका अर्थ है, आगे बढ़ने एवं बढ़ाने वाला, पतन से बचने एवं बचाने वाला विनाश से विकास की ओर ले जाने वाला ही नेता है।
- शासक वह है, जो मातृभूमि का दुःख-विमोचक बन जाए।
- शासक वह है, जो प्रजा हेतु चाहें जिस प्रकार के कष्ट हों, सहने को तैयार रहे एवं प्रजा का रक्षक बनजाए।

राष्ट्र के शासकों से मेरी अपील कि पुनः ''अगस्त क्रांति का उद्घोष हो-

- ६ अगस्त १६४२ का दिन हम भारतवासियों के लिए अद्भुत एव निर्णायक घटना थी। क्योंकि उस दिन देश की जनता के प्रबल संवेग एवं उत्कंठा की अभिव्यक्ति थी, जब उसने दृढ़निश्चय कर लिया था कि हम आजादी लेकर रहेंगे। जनता को उत्कट इच्छा, का वह प्रकटन उन अनेक प्रातः स्मरणीय प्रेरणादायी एवं मातृभूमि के प्रेमी-पुजारियों के त्याग व महान बलिदान का सुखद परिणाम था। जिसे 'अगस्त क्रांति के नाम से हम जानते है।
- भारत की वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालें तो मेरी धमनियों का रक्त खौल उठता है, जब राष्ट्रद्रोही विचारधारा के अयोग्य जनप्रतिनिधियों का असंयमित अनुशासनहीन व असभ्य भाषणों को सुनती हूँ।
- मेरा मन आक्रोशित हो उठता है, जब यह युवाओं को पथभ्रष्ट (ड्रग्स एवं नशे आदि से) होता देखती हूँ।
- मेरे हृदय में वेदना सी होती है जब बेरोजगार, भ्रष्टाचार, दुराचार, अपराध, दुष्कर्म एवं कुसंस्कारों के घृणित कँटकों को कुछ लोगों के जीवन में देखती हूँ।

पुनः अगस्त क्रांति की आवश्यकता क्यों ?

- आप सभी के द्वारा ऐसी नीतियों का निर्माण हो, जिससे राष्ट्र का युवा ड्रग्स आदि 'नशे के नर्क' में अपना जीवन न धकेले।

निःस्वार्थ भाव से बेरोजगारी दूर हो, ताकि युवा अपराध से अपने जीवन को न जला सकें।

- शिक्षा में विद्यालय एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर आधारभूत परिवर्तन हो, यानी शिक्षा, संस्कार एवं संस्कृति युक्त हो।

मातृभाषा मातृसंस्कृति सभ्यता एवं मातृभूमि के सभी जागरूक पुरोधा (अपने-अपने क्षेत्रों के नेतृत्वकर्ता) बनें। ताकि हमारे प्यारे राष्ट्र की एकता, अखण्डता मर्यादा गौरव एवं स्वाभिमान को चकनाचूर करने का दुस्साहस करने वाले मटियामेट हो सकें।

''सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोभि वः ।(अथर्व ३/३०/१)

अर्थात् राष्ट्रवासियों के बीच से विद्वेष की भावना समाप्त हो सभी सम्प्रदाय विशेष लोगों का एक हृदय एवं एक मन हो। वेद कहता है सब परस्पर ऐसे प्रीत (प्रेम) करें जैसे गाय अपने बछड़े से करती है।

राष्ट्र के जनप्रतिनिधियों से मेरे तीन प्रश्न

- जिनमें उपर्युक्त नेतृत्व गुण नहीं ये अयोग्य जनप्रतिनिधि मात्र हैं।
- जो मात्र दिखावे के लिए अर्थहीन धरना प्रदर्शन, तोड़-फोड़ आदि करते हैं।
- वे मात्र जनप्रतिनिधि हैं जो भोगी एवं विलासी प्रवृत्ति के हैं।
- जो मातृभूमि से प्रेम नहीं करते अपने कुकृत्यों से प्यारी भारत माँ को वेदना से भर देतेहैं, अपनी जनता से डकैती कर अपार कष्ट देते हैं
- जो किसी भी महापुरुष की जयंती मनाकर शुभकामनाएँ देकर घोर पाखण्ड करते है।
- जबकि उस महापुरुष ने राष्ट्र में क्या योगदान दिया, उन्हें कोई ज्ञान नहीं और न ही जानने की ये आवश्यकता समझते हैं।
- जिन्हें राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत या राष्ट्र सम्बन्धी किसी भी समस्या की कोई जानकारी नहीं है।
- जो सत्ता पाने की तृष्णा में सारी मर्यादाएँ तोड़ देते हैं।
- मैं अत्यंत तीखे शब्दों में कहूँगी कि सूर्य की किरणें समस्त विश्व को प्रकाशित कर देती हैं किन्तु उल्लू फिर भी नहीं देख पाता। ठीक वैसे ही ऐसे जनप्रतिनिधि प्यारी भारत माँ के बलिदानी, तपस्वी एवं राष्ट्र रक्षक सपूतों का मातृभूमि प्रेम एव समर्पित-आहूत जीवन दिखाई नहीं देता।

ऐसे जनप्रतिनिधियों से ३ बातें हम सभी जानना चाहेंगे-

१. जब आप लोकतंत्र के मन्दिर संसद भवन एवं विधान सभाओं आदि में अमर्यादित व्यवहार व अनुशासनहीनता (तोड़-फोड़, अभद्र वाणी का प्रयोग एवं मार पीट आदि ) करते हैं, तो अपने घर में अपने बच्चों को क्या सीख देते है ?

२. आप वज्र अयोग्य होते हुए भी चुनाव लड़ने एवं जीतने के लिए अत्याचार, भ्रष्ट्राचार आदि करते हैं ऐसे दुराचरण के लिए क्या आप कभी लज्जा का अनुभव करते हैं?

३. आपकी इस दूषित मानसिकता एवं विचारधारा के लिए आपकी अन्तरआत्मा क्या आपको कभी धिक्कारती नहीं?

राजधर्म क्या है?

संक्षेप में हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम, ईसाई यह धर्म नहीं, ये सभी तो सम्प्रदाय हैं एवं किसी विशिष्ट मत का अनुपालन है।

धर्म की अनेक व्युत्पत्तियाँ एवं परिभाषा है, जिनमें से एक मेरी प्रिय व्युत्पसि की चर्चा करती हूँ।

''ध्रियतेऽधःपतनपुरुषोऽनेनेति
धर्मः।''

अर्थात् जो किसी को गिरने (पतित) न दे, यदि कोई पतित होने लगे तो उसकी रक्षा करें, सहृदय, विद्वेष भावना रहित होकर जो समस्त

शेष पृष्ठ ७ पर....

# ईश्वर न्यायकारी व दयालु कैसे हो सकता है?

-स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

एक ईसाई बंधु ने आर्य विचारों पर यह आक्षेप किया है कि ईश्वर जब कर्मों का फल देता है तो वह न्यायकारी तो हो सकता है, परन्तु, दयालु कैसे कहला सकता है? क्योंकि दया का अर्थ है दण्ड दिये बिना क्षमा कर देना और न्याय का अर्थ है कर्मों के फल को बिना घटाए या न्यून किए देना। ये दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं तथा एक वस्तु में दो परस्पर-विरोधी गुण कैसे हो सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व इस बात का विचार करना आवश्यक है कि ईश्वर जो दण्ड देते हैं उसका प्रयोजन बदला लेना है अथवा सुधार करना? दूसरे, दण्ड देने से ईश्वर का कोई निजी लाभ है अथवा नहीं? तीसरे, यदि कोई निजी लाभ नहीं तो दण्ड अथवा कर्मफल किस उद्देश्य से दिया जाता है? चौथे, इस संसार में कई ऐसी भी देन हैं जो मनुष्य के कर्मों का फल नहीं, प्रत्युत ईश्वर की कृपा है। पाँचवें, क्या सभी कर्म इस प्रकार के हैं कि जिनका दण्ड देने से प्रभु अन्यायी कहलाता है? अथवा इनमें भी किसी प्रकार का भेद किया जा सकता है? इन्हीं प्रश्नों पर विचार करने से मूल प्रश्न का उत्तर स्वयमेव मिल जाएगा।

इस समय तक की खोज के परिणाम से इस बात का स्पष्ट पता चलता है कि दण्ड का प्रयोजन बुरी आदतों को दूर करके मनुष्य को ध्येयधाम की ओर जाने के योग्य बनाना है, बदला लेना नहीं। कारण? यदि दण्ड का प्रयोजन बदला लेना होता तो न्यायाधीश के मन में यह कदापि न आता कि वह चोर को कारागार में भेजे, प्रत्युत वह उसके घरबार को नीलाम करके जितना माल चोरी किया गया है उतना ही जुर्माना प्राप्त करता, क्योंकि सम्पत्ति की हानि अपराधी को कारागार में भेजने से तो कदापि पूरी नहीं हो सकती। परन्तु, सुधार का प्रयोजन जुर्माना से तो पूरा हो नहीं सकता। चोरी के अपराध में केवल जुर्माना का दण्ड बहुत न्यून समझा जाता है, जिससे पता चलता है कि विधि-विधान बनानेवालों (Law Makers) का उद्देश्य अपराधी का सुधार करना है। हमारे कई मित्र कहेंगे कि कई अवस्थाओं में हम अपराधी को फाँसी का दण्ड पाते हुए देखते हैं। उसमें किस प्रकार सुधार हो सकता है? परन्तु विचारशील सज्जन जानते हैं कि जब मनुष्य का मन दुष्कर्मों के करने में अवस्था में तुम्हारा उनके आदेश का पालन करने से पृथक् हो जाना अथवा ईश्वर की आज्ञा के विपरीत आचरण करना, सुधार के मार्ग से सर्वथा दूर जानेवाली बात है। जो व्यक्ति सुधार-पथ के विरुद्ध जायगा, उससे अवश्यमेव दोष उत्पन्न होगा। यही कर्मफल-व्यवस्था है।

तीसरी बात यह है कि कर्म दो प्रकार के होते हैं-एक 'विधि' अर्थात् करणीय कर्म और दूसरे 'निषेध' अर्थात् त्यागने योग्य। अब ये कर्म भी दो प्रकार के हैं। प्रथम वे कर्म, जिनका सम्बन्ध मनुष्य का मनुष्य से है या जीवात्मा का जीवात्मा से। दूसरे वे, जिनका सम्बन्ध जीव का ईश्वर से है। अब वे कर्म जिनका सम्बन्ध मनुष्य का अन्य जीवों से है, इस प्रकार से हैं कि उनको दण्ड न देना अकारण ईश्वर के न्याय पर कलंक लगाना होगा। क्योंकि ईश्वर का कोई गुण दूसरे गुण को हानि पहुँचाने वाला (एक-दूसरे की काट करने वाला) नहीं, इसलिए ईश्वर की दयालुता इस प्रकार के पापियों को दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ती। यद्यपि इस दण्ड में भी ईश्वर की दया ही पाई जाती है, तथापि ईश्वर की दया ऐसी नहीं है कि अपराधी के पाप को क्षमा करके उस अन्य पशुओं व मनुष्यों के लिए हानिकारक बनाकर अपने दया व न्याय दोनों गुणों का निषेध कर दें। क्योंकि, जिस समय दण्ड के प्राप्त न होने से स्वयं उस जीव की प्रवृत्ति बिगड़ती हो, दूसरे जीवों को हानि-कष्ट पहुँचता हो, उस समय दण्ड का न दिया जाना ईश्वर को दयालु होने की बजाय क्रूर सिद्ध करेगा।

इससे ईश्वर के दया व न्याय के गुणों पर कलंक आएगा। क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है, इसलिए वह ऐसे अवसरों को जानता है और उस समय दण्ड अवश्य देता है। अब रहे वे कर्म, जिनका संबंध किसी अन्य जीव से नहीं, प्रत्युत सीधा ईश्वर से होता है। ऐसे कर्मों को जिस समय जीव प्रार्थना करता है, उस समय परमात्मा उसकी सचाई जानकर क्षमा कर देता है। यह भी उनकी परम दयालुता का प्रमाण है। कारण यह कि उस समय न्याय की हत्या नहीं हुई और दया के प्रकाश से ईश्वर की दया भी प्रकट हो गई।

अब हम अपने उन मित्रों के लिए उदाहरण देकर इस बात को सिद्ध करते हैं जिससे वे हमारे अभिप्राय को समझ जाएँ। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति को मारा, अब उसने न्यायालय में जाकर अभियोग चलाया। दयालु न्यायाधीश ने अपनी दया को पूरा करने के लिए उस अभियुक्त को मुक्त कर दिया।

इससे दीन व्यक्ति का बड़ा अत्याचार हुआ और उस मारने वाले का उत्साह बढ़ गया। जिससे उस न्यायाधीश के न्याय की हत्या हो गई। कारण? उसके व्यवहार से एक पर दया हुई, दूसरे पर अन्याय। परन्तु, 'इन्साफ' शब्द निकला है 'निसफ' से, जिसके अर्थ हैं प्रेम को दोनों में निसफ-निसफ आधा-आधा बाँट देना।

जब दोनों से एक-जैसा स्नेह होगा तो वह किसी का पक्षपात नहीं कर सकता, क्योंकि जब तक एक से प्रेम न हो तब तक उसका पक्षपात नहीं हो सकता। जब न्यायाधीश का स्नेह दोनों ओर समान है तो जिसके कर्म खोटे होंगे उसको दण्ड देना पड़ेगा, तथा जिसके कर्म श्रेष्ठ होंगे उसको पुरस्कृत करना होगा। अब निःस्वार्थी न्यायाधीश द्वारा दण्ड व पुरस्कार दिया जाना उसके न्यायकारी व दयालु होने का प्रमाण है। कारण यह है कि उसने निःस्वार्थ भाव से अपराधी की दुष्प्रवृत्तियों को छुड़ाने के लिए दण्ड दिया, जिससे उसका सुधार होकर भविष्य में कुकर्मों से बचना सम्भव है, अतः उसने अपराधी के साथ दया का बर्ताव किया। और जिस पर अत्याचार हुआ उसके साथ भी न्याय व दया दोनों का बर्ताव हुआ।

दूसरे किसी व्यक्ति ने न्यायाधीश के किसी ऐसे आदेश का पालन न किया जिसका किसी अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध न था। जब वह न्यायाधीश के सम्मुख आकर क्षमा माँगने लगा तो न्यायाधीश द्वारा क्षमा करने से किसी भी व्यक्ति अथवा पशु पर अत्याचार नहीं हुआ जिससे कि उस न्यायाधीश के न्याय पर कलंक लगता है। अतः वह अपनी दया- भावना से उसको क्षमा कर दे तो कोई हानि नहीं। परमात्मा भी अपनी दया से ऐसे ही कर्मों को क्षमा करते हैं। ईसाई लोग जो प्रभु के न्याय व दया की सिद्धि के लिए ईसा का सूली पर चढ़ना और उसके कफ्फारा से (बदले में) पाप धो देने वाला दण्ड लोगों के पापों का क्षमा किया जाना जो मानते हैं, यह बड़ी भारी भूल है। क्योंकि इससे परमेश्वर पर बहुत-से कलंक लगने के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं है। पहले तो किसी व्यक्ति को दूसरे के स्थान पर दण्डित करना अन्याय व अत्याचार है, दूसरे, एक के फाँसी अथवा सूली पर चढ़ने से सबके पाप क्षमा कर देना दूसरा अन्याय है।

ईश्वर का एक गुण दूसरे का विरोधी नहीं, इसलिए जिससे ईश्वर के गुणों में परस्पर विरोध पाया जाय, वह मान्यता सर्वथा मिथ्या है। चौथी बात यह है कि इस सृष्टि में बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी हैं जिनके साथ मनुष्यों का बड़ा संबंध है। उनसे उनको सुख दुःख की अनुभूति होती है। परन्तु वे मनुष्यों के कर्मों का फल नहीं उदाहरण के रूप में सूर्य जिसके प्रकाश के बिना सांसारिक लोगों का कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता, चन्द्र, भूमि, समुद्र, तारागण, इस प्रकार की अगणित वस्तुएँ हैं जिनसे हमको लाभ पहुँचता है। क्योंकि वह लाभ प्रत्येक सज्जन-दुर्जन को प्राप्त हो रहा है, अतः वह कर्मों का फल नहीं, क्योंकि कर्मों का फल वह होता है जो एक के लिए हो, दूसरे के लिए न हो। अतः जिन वस्तुओं से सकल संसार को लाभ प्राप्त होता है, वे ईश्वर की दया से प्राप्त हुई हैं।

ईश्वर ने प्रत्येक आत्मा को अपने ध्येयधाम तक पहुँचने के लिए जहाँ उसके नयनों की सहायता के लिए सूर्य, कानों की सहायता के लिए आकाश, नाक की सहायता के लिए पृथिवी तथा रसना अर्थात् जिह्वा की सहायता के लिए जल देकर उसको बाह्य वस्तुओं के जानने की शक्ति प्रदान की, वहीं पर उनको आत्मिक शक्तियों के ज्ञान के लिए, जो किसी इन्द्रिय से अनुभव नहीं हो सकती, भीतरी यन्त्र बुद्धि दिया है और इसकी सहायता के लिए वेदोपदेश दिया। यद्यपि वर्तमान स्थितियों में सहस्रों ज्ञान-दीपक प्रज्वलित होने के कारण उनके प्रकाश से लाभान्वित होने वाले लोग सूर्य (वेद-भानुद्ध के ज्ञान-प्रकाश) की आवश्यकता को अनुभव नहीं करते, परन्तु प्रत्येक बुद्धिमान् मनुष्य जिसने कभी आधुनिक विश्व के मत-पंथों की अवस्था पर विचार किया है तथा माननीय व ईश्वरीय वस्तुओं की बनावट में भेद किया है, वह कदापि इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इस सृष्टि के आदि में गुरु था जिसकी शिक्षा से आज-पर्यन्त निरन्तर शिक्षा चल रही है। उसने कोई पुस्तक मनुष्यों के उपदेश के लिए, शिक्षा के लिए दी थी। कुछ लोग पुस्तक का अभिप्राय मुद्रित अथवा लिखी पुस्तक समझेंगे, परन्तु, हमारा अभिप्राय निरन्तर रहने वाले आदेशों (Eternal Laws), नित्य सिद्धान्तों तथा ज्ञान के नियमों के प्रकाश से है, न कि किसी प्रकाशित अथवा लिखी हुई पुस्तक से।

पवित्र वेद के अतिरिक्त जितने भी ग्रन्थों का इलहामी (ईश्वरीय ज्ञान) होने का दावा है, वे ४५०० वर्ष से पूर्व के नहीं है। इनकी उत्पत्ति कुछ ही वर्षों से इनके अनुयायी स्वयं स्वीकार करते हैं, यथा कुरान १३०० वर्षों से, जबूर २६०० वर्ष, तौरेत ३४०० वर्ष से, यन्दावस्था ४५०० वर्ष से ईश्वरीय आदेश बतलाने के लिए विद्यमान हों।

प्रत्येक दीपक मनुष्यों के बनाने से बनता है, अतः उनके निर्माण का, उत्पत्ति का समय भी संसार में ज्ञात होता है। इसके माननेवाले भी उसके इतिहास के साक्षी होते हैं। परन्तु वेदों के अनुयायी किसी भी विद्वान् ने वेदों की उत्पत्ति का समय आज तक नहीं बताया या लिखा, जिससे सिद्ध होता है कि प्रत्येक मनुष्य से पूर्व वेद था, अतः उन्होंने उसकी उत्पत्ति को देखा न लिखा। वेदों का उपदेश किसी जीव के कर्मों का फल नहीं, प्रत्युत वह ईश्वर की परम दया का प्रमाण है। यदि परमात्मा किसी भी मनुष्य के पापों को न भी क्षमा करे, प्रत्युत प्रत्येक कर्म का यथायोग्य दण्ड दे, तो भी उसके दयालु होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं हो सकता। कारण? उसका दण्ड देना दया के अतिरिक्त किसी अन्य भाव से नहीं, अतः ईश्वर के दयालु व न्यायकारी होने को परस्पविरोधी बतलाना ठीक नहीं, प्रत्युत न्यायकारी वही हो सकता है जो कि दयालु है। अन्यथा, दूसरी प्रकार के व्यक्ति तो न्यायकारी हो ही नहीं सकते। उनके स्वार्थपूर्ण संबंधों से अवश्यमेव पक्षपात होगा ही।

यदि हिंसक पशु क्रूर है तो मनुष्य क्यों नहीं? - इस युग में मुस्लिम समुदाय में निर्दयता व हिंसा देखिए। यदि किसी मुसलमान के हाथ में किसी अभियोग का निर्णय अथवा न्याय चला जाता है तो वहाँ पर साम्प्रदायिक पक्षपात, पूर्वाग्रह का बोलबाला अवश्य ही होता है।

शेष पृष्ठ ७ पर....

# वेदोज्वला

## (चन्द्रयान - ३ की सफलता पर विशेष)

-आचार्य राहुलदेवः

विषय - चन्द्रमा दीर्घायु प्रदान करता है।
ऋषिः - सूर्या सावित्री
देवता - चन्द्रमाः
छन्दः - पादनिचृत्त्रिष्टुप्
स्वरः - धैवतः

नवोनवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन्न्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः।।
-ऋग्वेद १०.८५.१९

पद पाठः -
नवःऽनवः । भवति । जायमानः । अह्नाम् । केतुः । उषसाम् । एति । अग्रम् । भागम् । देवेभ्यः । वि । दधाति । आऽयन् । प्र । चन्द्रमाः । तिरते । दीर्घम् । आयुः ।।
अन्वयः -
चन्द्रमाः नवः नवः जायमानः भवति अह्नाम् उषसाम् केतुः अग्रम् एति देवेभ्यः भागं विदधाति दीर्घम् आयुः प्र तिरते।
पदार्थः -
चन्द्रमाः = चन्द्रमा
नवः नवः = नया नया
जायमानः भवति = प्रतिरात्रि कलाओं से उदय होता है
अह्नाम् = दिनों में
उषसाम् = उषाओं में
केतुः = किरणें (प्रकाश)
अग्रम्-एति = कृष्णपक्ष में आगे चलता है
देवेभ्यः = देवों के लिए
भागं विदधाति = हविर्भाग नियत करता है।
दीर्घम् = लम्बी (बडी)
आयुः = आयु को
प्र तिरते = प्रकर्षण से बढ़ाता है।
भावार्थः -

चन्द्रमा प्रतिरात्रि कृष्णपक्ष में दिनों और उषावेलाओं से प्रथम आकाश में दृष्टिगोचर होता है, उसे देखकर यागों का निर्णय करते हैं देवताओं के प्रति हवि देने के लिए, चन्द्रमा के सदुपयोग से आयु बढ़ता है।

मन्त्र की मुख्य बातें -
१) चदि आह्लादे दीप्तौ च धातु से चन्द्र शब्द बनता है।
२) चन्द्रमा प्रतिरात्रि नया नया उत्पन्न होता है।
३) चन्द्रमा की सोलह कलाएँ सदैव नई होती है।
४) यह कृष्णपक्ष से आगे बढता है।
५) उषा वेला में प्रथम दृष्टिगोचर होता है।
६) यज्ञों में हविर्भाग नीयत करता है।
७) आयु को लम्बा खैंचता है।

व्याख्या -

अभी कुछ दिन पहले २३ अगस्त को इसरो ने चन्द्रयान - ३ को बडी ही सफलता पूर्वक चन्द्रमा की दक्षिणी ध्रुव पर उतारा था। यह भारत की ऐतिहासिक सफलता है। भारत चन्द्रमा पर सफलता पूर्वक उतरने वाला चौथा देश और चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बन गया है। १४ जुलाई को प्रक्षेपित किया गया चन्द्रयान - ३, चालीस दिन की यात्रा के बाद ३.८४ किलोमीटर की यात्रा तय करके चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव पर पहुंचा है। यह यात्रा कई कारणों से ऐतिहासिक है। इसरो के अध्यक्ष एस एस सोमनाथ आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ भारतीय ऋषियों द्वारा अनुसंधान किये गये खगोल शास्त्र की भी जानकारी रखते है। उनके अनुसार भारतीय शास्त्रों के बहुत सारे सूत्र, श्लोक, मन्त्र और प्रमाण आधुनिक फिजिक्स साईंस पर सटीक बैठते है। उनका बहुत ही दृढ विश्वास है कि भारत प्राचीन काल से ही खगोल शास्त्र में विश्व का अग्रणी रहा है। सूर्य चन्द्र की घूर्णन की गति, प्रकाश और ध्वनि की गति, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, वार, तिथि, नक्षत्र, काल गणना में भारत सिरमौर रहा है और है। इसलिए तो भारत सबसे कम खर्चे में उस स्थान पर पहुंचा है जहाँ पर अब तक कोई देश नहीं पहुंचा है। यह भारत के वैज्ञानिकों और भारतवासियों का विश्वास है कि हम विद्या कला कौशल में सर्वोपरि थे और हैं। इस विशेष ऐतिहासिक अवसर पर इस ऋग्वेदीय मन्त्र में वर्णित चन्द्रमा की कुछ विशेषताओं की चर्चा करते हैं।

मन्त्र की विशेषता ही यह है कि मन्त्र का देवता स्वयं चन्द्रमा है। देवता से तात्पर्य विषय वस्तु से है। इस मन्त्र में चन्द्रमा की विशेषता बताई गई है। चन्द्रमा को डिजाईन करने वाले कारीगर ने स्वयं बताया है कि चन्द्रमा कैसे काम करता है और उसकी उपयोगिता क्या है। चन्द्रयान - ३ से तो हमें आज के वातावरण के अनुसार बहुत सी जानकारी मिलेगी। किन्तु दो अरब वर्ष से चमक रहे इस चन्द्रमा का मुख्य कार्य क्या है, यह वेद के इस मन्त्र ने बताया है। मुझे चारों वेदों में चन्द्रमा इस शब्द से ७५ मन्त्र मिले। सब मन्त्रों के पदार्थ और भावार्थ को मैंने पढा। उनमें से मैंने इस एक मन्त्र का चयन किया है। आशा करता हूँ चन्द्रमा से जैसी शीतलता आपको मिलती है। और चन्द्रमा को देखकर आप जैसे प्रसन्न होते होंगे कुछ वैसा ही आह्लाद आपको इस मन्त्र के स्वाध्याय से भी प्राप्त होगा।

वेद स्वाध्याय शील पाठकों! इस मन्त्र में चन्द्रमा के पाँच कार्य बतायें गये है -

१) चन्द्रमा नवनव जायमानो भवति।
२) चन्द्रमा अह्नाम् केतुः अग्रं एति।
३) चन्द्रमा उषसाम् केतुः अग्रम् एति।
४) चन्द्रमा आयन् देवेभ्यः भागम् विदधाति।
५) चन्द्रमा दीर्घम् आयुः प्रतिरते।

आइए इस पर विचार करते हैं -

१) चन्द्रमा नवनव जायमानः भवति - चन्द्रमा का प्रथम कार्य यह है कि यह प्रतिअहोरात्र नयानया उदय होता है, नये आह्लाद के साथ उत्पन्न होता है, इसमें पुराना या बाँसी जैसा कुछ नहीं होता प्रति अहोरात्र का चन्द्रमा नई संजीवनी, नया मधु, नई शीतलता लेकर आता है। इसके प्रत्येक कलाओं में नवीनता होती है। इसकी कोई भी कला एक जैसी नहीं है। प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पूंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा यह सोलह कलाएँ हैं। इनमें चैत्रादि बारह मासों और छः ऋतुओं में भिन्न भिन्न योग से नई नई कलाएँ बनती है। जैसे श्रावण पूर्णिमा जनेऊ और विद्यारम्भ, वेदारम्भ, शरद् पूर्णिमा में आरोग्य, फाल्गुन पूर्णिमा में होली, कार्तिक अमावस्या में दीपावली आदि सभी तिथियों का महत्व है। चन्द्रमा की कलाएँ ही हमारी तिथियाँ बनाती हैं। जिनसे प्रतिदिन अहोरात्र की गिनती होती है। पंचाङ्ग में प्रथम अंग ही तिथि होती है। यह चन्द्रमा हमारी काल गणना और पंचाङ्ग का आधार भूत है जो प्रति अहोरात्र नयानया उत्पन्न होकर हमको नया नया अह्लाद प्रदान करता है।

२) चन्द्रमा अह्नाम् केतुः अग्रं एति - चन्द्रमा का द्वितीय कार्य है वह दिन के प्रकाश को आगे बढाता है। दिन में सूर्य से प्रकाश प्राप्त करके रात्रि को उसी प्रकाश से पृथ्वी को प्रकाशित करता है। चन्द्रमा का रात्रि का प्रकाश फसलों के लिये बडा लाभदायक होता है। चन्द्रमा के प्रकाश से फसलों में दुध का संचार होता है। वृक्षों को सूर्य के ताप के साथ-साथ चन्द्रमा के शीतलता की भी आवश्यकता होती है। सूर्य के बाद आसमान में सबसे अधिक चमकदार निकाय चन्द्रमा है। समुद्र में ज्वार और भाटा चन्द्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण आते हैं। चन्द्रमा पर गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से १/६ है। यह पृथ्वी कि परिक्रमा २७ दिन ६ घंटे में पूरा करता है और अपने अक्ष के चारो ओर एक पूरा चक्कर भी २७.३ दिन में लगाता है। चन्द्रमा हमें कृष्ण पक्ष से आगे बाढाता है। और पूर्णिमा से मास की समाप्ति करता है।

३) चन्द्रमा उषसाम् केतुः अग्रम् एति - चन्द्रमा उषा काल में आगे चलता है। रात्रि में वह प्रकाश की जिम्मेदारी निभाता हुआ उषाकाल तक दृष्टिगोचर होता है। ब्राह्म मुहूर्त को सबसे श्रेष्ठ मुहूर्त बनाने में चन्द्रमा सबसे अग्रणी भूमिका निभाता है। वैदिक शास्त्रों में ब्राह्म मुहूर्त की बहुत बडी महिमा है। ब्राह्म मुहूर्त की तरह ही उषाकाल को भी दिन में सर्वश्रेष्ठ काल कहा गया है। ब्राह्म मुहूर्त और उषाकाला दोनों का सम्बन्ध चन्द्रमा से है। चन्द्रमा ही ऐसा नक्षत्र है जो ब्राह्म मुहूर्त और उषाकाल का निर्माण करता है। ये दोनों काल व्यक्ति की बौद्धिक उन्नति के लिये सर्वश्रेष्ठ काल माने गये हैं। जब योगी, ऋषि, मुनि, महात्मा, ब्राह्म मुहूर्त में उठकर परमेश्वर का ध्यान, उपासना, जप, तप, व्रतानुष्ठान, स्नान, सन्ध्या में लग जाते है। यह मुहूर्त बिना चन्द्रमा के सम्भव नहीं है। क्योंकि इस समय में मन को वश में करने में चन्द्रमा हमारी सहायता करता है क्योंकि परमात्मा ने स्वयं अपने मन से चन्द्रमा की उत्पत्ति की है। चन्द्रमा मनसो जातः। इसलिए प्रभु के मन से उत्पन्न हुआ चन्द्रमा मनुष्यों के मन को एकाग्र करने में बडा सहायक होता है। चित्त की वृत्तियों के निरोध में यह काल सर्वोत्तम है। इसलिये उषाकाल में चन्द्रमा हमें आगे ले चलता है। क्योंकि चन्द्रमा न हो तो उषाकाल न हो और उषाकाल न हो तो मनुष्य की महानता ही नहीं हो। उषाकाल पुष्पों के पराग के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि बिना उषाकाल के फुलों में मधु नहीं आता। मधुमक्खी जो फुलों से शहद लेती है वाह शहद बिना चन्द्रमा की शीतलता के प्राप्त नहीं हो सकता। कमल, गुलाब आदि पुष्प चन्द्रमा के बिना खिल नहीं सकते। अतः चन्द्रमा उषाकाला में आगे चलता है और प्रथम उपस्थित रहता है।

४) चन्द्रमा आयन् देवेभ्यः भागम् विदधाति - चन्द्रमा का चौथा कार्य है देवों को हविर्भाग दिलावाना। क्योंकि चन्द्रमा के आधार पर तिथियाँ निश्चित होती है और कर्मकाण्ड के विद्वान उन तिथियों के आधार पर ही अपने कर्मकाण्ड यज्ञ, याग आदि करते हैं और यजमानों से हविर्भाग करवाते है। वेद में चन्द्रमा को नक्षत्रों का अधिपति कहा है। और कहा है कि वह नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हमारी रक्षा करे। हम भारतीयों के सारे पर्व नक्षत्रों पर आधारित है और सभी नक्षत्रों में चन्द्रमा प्रमुख है। अतः हमारे सारे पर्व चन्द्रमा निर्धारित करता है यह कहे तो कोई अलग बात नहीं है। इस प्रकार चन्द्रमा सभी तैत्तीस प्रकार के देवताओं को हवि दिलावाने में प्रमुख देवता है। क्योंकि तैंत्तीस देवताओं में आठ वसु भी आते है और आठ वसुओं में चन्द्रमा की भी गिनती होती है। इस प्रकार हमारे कर्मकाण्ड और याग आदि में चन्द्रमा महत्वपूर्ण कार्य करता है।

५) चन्द्रमा दीर्घम् आयुः प्रतिरते - चन्द्रमा का पाँचवाँ कार्य है वह हमारी आयु बढाता है। आजकल के वैज्ञानिक क्या वेद के इस वचन को मानेंगे? वेद का यह मन्त्र स्पष्ट रुप से दीर्घायु की बात कर रहा है। आखिर चन्द्रमा किस आधार पर हमारी आयु वृद्धि में सहायक है? आप ने यदि चन्द्रमा के उपरोक्त चार कार्यों को ठीक से पढा है और समझा है तो यह स्पष्ट है कि चन्द्रमा केवल काल गणना में हमारा सहायक ही नहीं अपितु हमें काल भी प्रदान करता है। काल प्राप्त करना ही आयु वृद्धि करना है। जिस प्रकार से चन्द्रमा काल में कारण है, यज्ञादि कर्मकाण्ड में कारण है, उषाकाल में कारण है, ब्राह्म मुहूर्त में कारण है, कृष्णपक्ष और शुक्ल पक्ष में कारण है, अमावस्या और पूर्णिमा में कारण है। वैसे ही वह शयन, जागरण, दिनचर्या के निर्वहन, ऋतुओं के परिवर्तन में कारण होने से हमारे शरीर, मन और वातावरण पर भी प्रभाव डालता है। आयुर्वेद के सूक्ष्म अध्ययन से भी यह हमें ज्ञात होता है कि ज्ञानपूर्वक गति करने से चन्द्रमा हमारी आयु वृद्धि में सहायक है।

अध्यात्म क्षेत्र में उन्नति किये बिना, वेद मन्त्रों के इन गूढ़ रहस्यों का भला कोई भेद पा सकता है? भारत सदैव अध्यात्म और भौतिक दोनों क्षेत्रों में उन्नति का समन्वयक रहा है। भारत का यह दृढ़तम विश्वास है कि अध्यात्म के बिना भौतिक उन्नति अंधी है और विध्वंसक है। और विज्ञान के बिना अध्यात्म भी कोराज्ञान मात्र है। इसलिए भारत तेरी यात्रा चन्द्रमा पर और उससे भी आगे चलती रही परन्तु अध्यात्म की यात्रा में तू सदैव शीर्षस्थ पर ही रहना।

आओ वेदों की ओर लौटों।

सम्पर्क सूत्र-९६८१८४९४१९

पृष्ठ.....५ का शेष

भला वे लोग जो दया का भाव नहीं रखते, किस प्रकार न्यायकारी हो सकते हैं? तनिक गम्भीरता ईसाई तथा मुसलमान बंधुओं को देखें।

वे लोग सिंह आदि हिंसक पशुओं को इस कारण से क्रूर बताते हैं कि वे पशुओं को मार डालते हैं। परन्तु उन बंधुओं को जो दिन-रात पशुओं को मार-मारकर खाते हैं, कभी अन्यायी क्रूर नहीं कहते। ईश्वर ने अपने सृष्टि-नियम के अनुसार सिंह आदि को चर्म का और सुअर आदि मल खाने वालों को गंदगी को दूर करने का कार्य सौंपा है। इससे प्रतीत होता है। कि हिंसक पशु का भोजन केवल मांस ही निश्चित किया गया है, परन्तु मनुष्य को मांसाहारी नहीं बनाया। तो भी, वे बेचारे जो सृष्टि नियमानुसार कार्य करते हैं, क्रूर हैं, और ये लोग जो सर्वथा नियम-विरुद्ध चलते हैं, श्रेष्ठ हैं। अन्यायी लोग ऐसा ही न्याय करते हैं। परन्तु दयालु परमात्मा न न्याय के साथ ही दया को जोड़ा है।

जो दूसरे की पीड़ा अनुभव करे सो दयालु-जिसको दूसरों के दुःखों से कष्ट अनुभव होता है, वही उसको दूर करने का प्रयास करता है। जो दूसरों के दुःखों से पीड़ा अनुभव नहीं करता, वह किस प्रकार उसके निवारण का यत्न कर सकता है?

ईसाई व मुसलमानी मत में खुदा न तो दयालु हो सकता है और न ही न्यायकारी। कारण? जीवों को स्वयं ही भले-बुरे के भेद से पृथक् रखकर उनको पापों का फल देना सर्वथा अन्याय है। ईसाइयों के खुदा ने आदम की उत्पत्ति के समय ही उसको पाप-पुण्य के भेद (ज्ञान-वृक्ष को न चखने से विवेक-शून्य रहना स्वाभाविक ही है) से पृथक् कर दिया, जिससे सिद्ध होता है कि ईसाइयों का खुदा दयालु नहीं, क्योंकि किसी व्यक्ति को ऐसे स्थान पर पहुँचा देना जहाँ पर पाप व पुण्य दोनों की सम्भावना हो, और उसको खरे-खोटे, हानि-नाभ का बोध प्राप्त करने का साधन न देना, दया से सर्वथा विपरीत है। ईसाई मत में मूसा की पुस्तक से पूर्व कोई पुस्तक दिखाई नहीं देती। हम जहाँ तक खोज करते हैं, वहाँ तक सुस्पष्ट पता चलता है कि जो रीति दया व न्याय के पूर्ण करने की ईसाई भाई बतलाते हैं, वह सर्वथा गलत प्रत्युत खुल्लमखुल्ला आँखों में धूल डालने वाली है, क्योंकि जब तक एक व्यक्ति को लाख के बोझ के नीचे दाब दिया जाय और वह उसे पसन्द न करता हो, जैसा कि हजुरत ईसा की मृत्यु के समय के वृत्तान्त से ज्ञात होता है, तो स्पष्ट कहना पड़ता है कि इससे बढ़कर अन्याय और क्या हो सकता है कि जेकब के पाप का दण्ड मिल्टन को देकर न्याय व दया की पूर्ति कहा जावे!

सुधार बिना दण्ड सम्भव नहीं-ईसाई बंधु मजहब में बुद्धि का प्रवेश उचित नहीं मानते, इसलिए उनके मस्तिष्क इंजील की दुर्बलताओं को समझने में असमर्थ हैं। वे खुदा की दया को पापों को क्षमा करने से ही पूर्ण करना चाहते हैं। परन्तु दया की पूर्ति के लिए पापियों को दण्ड देना ही यथार्थ है, क्योंकि इसी प्रकार से उनकी प्रवृत्तियों का सुधार होता है और अन्य लोगों को भी इससे शिक्षा प्राप्त होती है तथा मनुष्यों को पाप करने का साहस नहीं होता है। पापों को क्षमा करने से लोगों को पाप करने में तनिक भी भय नहीं रहता औरवे पाप-कर्मों को माता के दूध समान मानकर (अपना अधिकार समझकर) उचित-अनुचित व्यवहार से बचकर नहीं चलते।

जब दया निर्दयता बनती है-अतः वे कर्म, जिनका सम्बन्ध मनुष्यों के परस्पर के व्यवहार से है, यदि ऐसे दुष्कर्मों को क्षमा किया जायगा तो फिर रहमत ही जहमत (दया ही निर्दयता) सिद्ध होगी। उत्पत्ति की पुस्तक में (The Book of Genesis) जिस प्रकार परमेश्वर को अनेक बार पछताना पड़ा है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रवृत्ति को बिगाड़ने वाले पापों को क्षमा करने से भी परमात्मा को पछताना पड़ेगा। यह सर्वज्ञ प्रभु की प्रतिष्ठा के सर्वथा विपरीत है।

---

पृष्ठ.....४ का शेष

विश्व को धारण करे, यह धर्म है।

जैसे अग्नि का धर्म है- जलाना वायु का धर्म है सुखाना, जल का धर्म है- भिंगोना वैसे ही नेतृत्वकर्ताओं का भी धर्म है, जनता का अपनी संतानों की भाँति पालन-पोषण एवं रक्षण। यही राजधर्म है।

हम सभी युवा मातृभूमि की उपासना करें

राष्ट्र रक्षा हम युवाओं का भी परम धर्म है। हम सभी के मन मस्तिष्क एवं हृदय में राष्ट्र प्रेम की अग्नि को प्रदीप्त करते हुए ऋग्वेद का संदेश है-

'उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीलाः ।'' (ऋ. १०/१०१/१)

उठो जागो युवाओं! मनोबल से अनुप्राणित हो जाओ। एक राष्ट्रवासी तुम सभी अपने अन्दर उत्साह की अग्नि जलाओ राष्ट्र रक्षा हेतु उस हुँकार भरती अग्नि का आह्वान करो।

तुममे अपार क्षमता है, उसे धारण करते ही तुम क्रियाशील हो उठोगे।

स्वामी रामतीर्थ के शब्दों में ''जब मैं चलता हूँ तो अनुभव करता हूँ कि इस रूप में मेरा देश चल रहा है। जब मैं बोलता हूँ तो मैं अनुभव करता हूँ कि मेरी वाणी में मेरा देश बोल रहा है जब मैं साँस लेता हूँ तो अनुभव करता हूँ कि मेरी धमनियों में मेरा देश सांस रहा है।''

युवा शक्ति ही समाज एवं राष्ट्र की मुख्य शक्ति है। ''युवा शक्ति राष्ट्र की दिशा एवं दशा दोनों बदल सकती है। (जीवन का झाँकी)

हम मातृभूमि की सेवा हेतु क्रांति करें

''क्रांति'' अत्यंत पावन एवं तेजस्वी शब्द है। यह मेरे प्रिय शब्दों में से एक है। हमारे समाज में क्रांति' को लेकर भ्रामक अवारणाएँ प्रचलित है। जैसे वर्तमान व्यवस्था को तोड़ना - फोड़ना अमर्यादित प्रदर्शन आदि-आदि। किन्तु जब हम वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य की दृष्टि से देखें तो ''क्रान्ति शब्द क्रमु धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय से उत्पन्न है। क्रमु का अर्थ है, पादविक्षेप यानी आगे बढ़ना, उन्नति करना, समाज एवं राष्ट्र की समस्त समस्याओं का समाधान ही क्रांति है

क्रांति कैसे करें?

अपनी वाणी, मन एवं कर्मों का अनुशासन बनाए रखना ताकि हमारे सदाचरण की सुगन्ध से सम्पूर्ण राष्ट्र पवित्र हो जाए तो समझें क्रांति हो गयी।

जब हम सब मिलकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं के समाधान बन तो क्रांति हो जाएगी।

जब हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ-साथ संस्कारवान (नैतिक गुणों से युक्त, चरित्रवान, आत्मबली, मानवता का पुजारी) बनाएँ तो क्रांति हो जायेगी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत करते हुए कहूँगी कि ईद या रोजा आदि के समय में हिन्दू भाईयों का मुस्लिम भाईयों के साथ बैठकर सिवईया आदि खाने मात्र से एकता, अखण्डता नहीं बनेगी। जब पुनः कोई देशभक्त अशफाक उल्ला खाँ किसी देशभक्त पं० रामप्रसाद बिस्मिल के साथ एक थाली में भोजन करते हुए (फिर चाहें कोई काफिर ही क्यों न कहे) मातृभूमि के गीत एक साथ गाएंगे उस दिन क्रांति स्वतः हो जाएगी कोई रोक न पाएगा।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि दुर्मति लोगों को सद्बुद्धि प्राप्त हो हम सभी विचारशील, विवेकशील, क्रियाशील, मननशील एवं चरित्रशील होकर मातृभूमि की उपासना करें ताकि हमारे राष्ट्र पर किसी (तालिबानी जैसे लम्पट एवं निकृष्ट शत्रुओं) की कुदृष्टि पड़े तो उसका सिर धड़ से अलग कर सकें।

## आर्य समाज चौक प्रयागराज में वेद प्रचार सप्ताह

दिनांक ३१ अगस्त २०२३ को आर्यसमाज चौक प्रयाग में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत बिजनौर से पधारे आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने सुबह के सत्र में यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के मंत्रों के साथ यह बताते हुए की परम् धर्म क्या है धर्म क्या है। अध्ययन व स्वाध्याय में अंतर बताते हुए यजुर्वेद परायण यज्ञ का शुभारम्भ किया। आज के यजमान श्री प्रताप नारायण मिश्र, श्री अरुणेश जायसवाल, श्री राजकृष्ण अग्रवाल, श्री सुभाष जायसवाल थे।

इसके पश्चात संध्या आर्या ने एक भजन की प्रस्तुति दी प्रातः सायं संध्या हवन कर लें। आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने आज के व्याख्यान के अंतर्गत यज्ञ, यज्ञ के अंतर्गत आने वाले हवन और हवन के अंतर्गत आने वाले हवि के सम्बंध में विस्तृत रूप से अनेकों उदाहरण देते हुए बताया। हमारा आधार पृथ्वी, पृथ्वी का आधार परमात्मा है तो परमात्मा का आधार क्या है? ऐसे ही अनेक उदाहरण देते हुए वेद के ज्ञान की गंगा प्रवाहित की।

## महर्षि दयानन्द गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) का स्थापना दिवस समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के पूर्व मंत्री स्व. स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित महर्षि दयानन्द गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) बहादुरगढ़, हापुड़ का स्थापना दिवस समारोह दिनांक ०६ सितम्बर, २०२३ दिन-बुधवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है।

समारोह में आर्य जगत के संन्यासी विद्वान, उपदेशक आदि पधार रहे हैं। सभी धर्म प्रेमी नर-नारियों से निवेदन है कि समारोह में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल करें एवं विद्वानों के प्रवचनों से लाभ उठावें। कार्यक्रम प्रातः ६:०० बजे से मध्याह्न १:०० बजे तक चलेगा।

सम्पर्क सूत्र-८०७७३५२७५६

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र ३१ अगस्त, २०२३ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६४१५३६५५७६, सम्पादक-६४५१८८१६७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

# आर्य समाज के इतिहास में पहली बार आगरा रेलवे

## स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टालों का भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न

## दिल्ली सभा द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचार की एक नई शुरूआत

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से आर्य समाज लगातार मानव मात्र को सुदिशा प्रदान करता आ रहा है। आर्य समाज द्वारा जहां एक तरफ समाज में फैले हुए अविद्या, अंधकार, ढोंग पाखंड और अंधविश्वास को दूर भगाने का कार्य किया गया, वहीं सामाजिक कुरीतियों के प्रति भी मानव मात्र को निरंतर जागृत और सजग करने के लिए अभियान चलाए गए। इसके साथ ही वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज का वैदिक साहित्य अपने आप में एक बहुत बड़ी ज्ञान संपदा है, जिसका हमारे पूर्वजों ने एक दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ सृजन किया है। आर्य समाज का वैदिक साहित्य हजारों की संख्या में नहीं बल्कि लाखों पुस्तकों के रूप में निर्मित और उपलब्ध है, जिसके पठन-पाठन से मानव समाज को जीवन जीने की कला और राष्ट्र एवं मानव कल्याण की शिक्षाएं तथा उचित और अनुचित को समझने की योग्यता प्राप्त होती है। इसके लिए आर्य समाज समय-समय पर वैदिक साहित्य का निःशुल्क वितरण भी करता है। इस सब के पीछे आर्य समाज की केवल एक ही भावना है की संपूर्ण मानव जाति कल्याण के पथ पर अग्रसर हो और भारत सहित विश्व समुदाय अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का भेद समझे, सोचे और मानवता का सजग प्रहरी बनकर शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कार्यों में प्रवर्त हो ।

इसी महत्वपूर्ण भावना और कामना को साकार करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २००वीं जयंती एवं आर्य समाज के १५०वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो काफी लंबे समय से प्रयास किया जा रहा था कि भारत के रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित किए जाएं, आर्य समाज की मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए, इसके लिए भारतीय रेलवे की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को १० रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित करने की अनुमति प्राप्त हुई है। जिसमें से २० अगस्त २०२३ को उत्तर प्रदेश के आगरा कैंट एवं आगरा फोर्ट रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्म नंबर दो और तीन पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित कर विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, पश्चिम में दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान, श्री सुरेंद्र आर्य जी, आर्य समाज सेक्टर-१६ रोहिणी के प्रधान श्री प्रदीप आर्य जी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, मंत्री डॉ मुकेश आर्य जी, आर्य समाज सी-३ से श्री अजय तनेजा जी, रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल के चेयरमैन, श्री संजय आर्य जी, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री, श्री बृहस्पति आर्य जी, श्री दिनेश शास्त्री जी, श्री धर्मवीर जी, श्री मनोज आर्य जी, श्री गौरव आर्य जी, श्री सुरेश कामती जी, श्री विजय आर्य जी, श्रीमती आरती खट्टर जी, श्रीमती रश्मि वर्मा जी, श्रीमती किरण चड्ढा जी तथा दिल्ली के अनेक अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। आगरा क्षेत्र के विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी कार्यकर्ता और सदस्यों में श्री रमन वासन जी, श्री सुरेश चंद्र गर्ग जी, श्री पूरन डाबर जी, श्री रमाकांत सारस्वत जी, श्री अजय महोत्रा जी, श्रीमती शशि चोपड़ा जी, श्री अजय चोपड़ा जी, प्रस्तुति श्रीवास्तव जी, खंडेलवाल जी, श्री अरविंद मेहता जी, श्री विजय अग्रवाल जी, श्रीराम प्रकाश गुप्ता जी एवं अन्य अनेक महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति थी। वैदिक साहित्य के स्टालों का उद्घाटन हुआ और सभी आर्यजनों में उमंग उत्साह और उल्लास था। इस अवसर पर ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ किया गया गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए दीप प्रज्वलन किया गया और सभी महानुभावों ने महर्षि दयानंद सरस्वती का जय जयकार किया आर्य समाज अमर रहे, ओम का झंडा ऊंचा रहे, वेद की ज्योति जलती रहे के जयघोष लगाए।

# महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को घर-घर पहुंचाने का संकल्प

आर्य समाज नई मंडी में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर द्वारा आयोजित दिनांक २७ अगस्त, २०२३ को बैठक में आर्य समाज को गति देने के लिए एक राय होकर कार्य करने का संकल्प लिया गया और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों को घर-घर तक पहुंचने का लक्ष्य निर्धारित किया।

बैठक में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री एवं प्रदेश प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष अरविंद कुमार आर्य ने बताया कि उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा २६ से २८ अक्टूबर तक राजघाट नरोरा जनपद बुलंदशहर में ज्ञान ज्योति पर्व के रूप में एक बड़ा आयोजन किया जाएगा। उन्होंने जनपद के सभी आर्य समाजो से अनुरोध किया की सभी आर्य समाज १२ फरवरी २०२४ तक अपनी गतिविधि तेज कर दें

आर्य समाज नई मंडी के आनंद आर्य एवं सत्य प्रकाश आर्य ने बताया कि ३ सितंबर को इस आर्य समाज में एक व्रत सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा और इसके पश्चात आर्य समाज के विचारों को गति देने के लिए घर-घर जाकर यज्ञों के माध्यम से महर्षि के विचारों का प्रचार किया जाएगा। आर्य समाज भांडवली के मंत्री परविंदर आर्य ने बताया कि डिंडोली आर्य समाज का उत्सव १ से ३ अक्टूबर तक मनाया जाएगा और इसके पश्चात पूरे क्षेत्र में महर्षि के विचारों को गति देने के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। खतौली से आए आर्य समाज शिवपुरी के अध्यक्ष जगदीश सिंह ने बताया की शिवपुरी में आगामी ५ सितंबर से ७ सितंबर तक ३ दिन का आयोजन किया जा रहा है इसके बाद पूरे क्षेत्र में अलग-अलग विद्यालयों में जाकर छात्र-छात्राओं को महर्षि के विचारों से अवगत कराया जाएगा गौरव आर्य संयोजक आर्य वीर दल ने बताया कि इस समय आर्य समाज आनंदपुरी शहाबुद्दीनपुर मंसूरपुर और जड़ौदा में कक्षाएं चलाई जा रहे हैं भविष्य में और दूसरे स्थान पर भी आर्यवीर दल की कक्षाएं शुरू की जाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान सत्येंद्र आर्य ने और संचालन अरविंद आर्य ने किया इस अवसर पर वीरेंद्र बालियां अतर सिंह आर्य रेखा आर्य राजबाला शकुंतला आर्य अपर्णा मुद्गल प्रतिभा तायल सुरेश आर्य रवि गुप्ता मनीराम संजीव कुमार चंद्रलेखा वेद प्रकाश महिपाल आर्य सरवन कुमार आर्य अजय गर्ग सुरेश फौजी आचार्य कुमार पाल शास्त्री महाराज सिंह आदि बहुत से लोग बैठक में शामिल रहे। जिला उप प्रधान दीपक त्यागी जी ने उपस्थित सभी आर्यजनों का आभार व्यक्त किया।

# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में मॉरीशस के राष्ट्रपति आमंत्रित

महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्म शताब्दी के पावन अवसर पर आयोजित भारत के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०२५ में मॉरीशस के महामहिम राष्ट्रपति श्री पृथ्वीराज सिंह को दिनांक १८ अगस्त, २०२३ को अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने राष्ट्रपति भवन जाकर भेंट कर उन्हें अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश, मनुस्मृति व आध्यात्मिक साहित्य की पुस्तकें उपहार देकर सम्मेलन में आमंत्रित किया। इसके पश्चात मॉरिशस में नियुक्त भारतीय राजदूत श्रीमती के. नंदिनी सिंगला जी से शिष्टमंडल सहित भेंट की।

दीक्षण अफ्रीका महाद्वीप के हिन्द महासागर के दक्षिण पश्चिम स्थिति अद्भुत सुन्दरता समेटे लगभग ५० दीपों के देश मॉरीशस में सर्वप्रथम सन् १९६३ई. में आर्य समाज की स्थापना हुई थी। यों तो यहाँ आर्य विचारधारा सन् १८९७ई. में ब्रिटिश सेना के कुछ हिन्दू सैनिकों के माध्यम से आई थी। आज यहां लगभग ६०० आर्य समाज मंदिरों के अन्तर्गत लगभग ढाई लाख आर्य बन्धु महर्षि दयानन्द की वैदिक दुन्दुभि नॉद कर रहे हैं। इस देश को १९६८ में स्वतंत्र कराने का श्रेय आर्यों को जाता है। स्त्री शिक्षा, अंधविश्वास निर्मूलन पंच यज्ञ परंपरा व राष्ट्र के उत्थान में आर्य समाज की मुख्य भूमिका रही है।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।